एक दुर्घटना

यह एक दुर्घटना है जो मेरे साथ तीन साल पहले घटी। तब मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती थी। यह दुर्घटना टैम्पो के पलटने से हुई थी। मैं और मेरे साथ के बच्चे उस टैम्पो से स्कूल जाते थे। वह टैम्पो चालक टैम्पो एक मोड़ पर बहुत तेज़ गति से चलाता था। कुछ बच्चे उसे टैम्पो तेज़ चलाने को कहते पर मैं और मेरी कुछ सहेलियाँ उसे मना करते। लेकिन वो हमारी बात नहीं सुनता था। और अचानक एक दिन वह टैम्पो पलट गया और बहुत से बच्चों को चोट लगी। जिसमें मुझे सिर में चोट आई थी। और मुझे चार टाँके लगे थे। इस कारण से मैं अपने स्कूल में चल रहे कार्यक्रमों में भाग नहीं ले पाई थी। इस दुर्घटना को मैं अगर भुलाना भी चाहती तो नहीं भुला पाती।

● रूपल पटेल, दसवीं, देवास, म.प्र.

सफेद चूहा और काला चूहा

एक सफेद चूहा और एक काला चूहा था। दोनों अपनी गुफा में जा रहे थे तो एक बिल्ली ने सफेद चूहे को पकड़ लिया। तो काला चूहा बोला कि मेरे दोस्त को छोड़ दो। तो बिल्ली बोली कि मेरे लिए दूध ला। चूहा गाय के पास गया। चूहा गाय से कहने लगा कि गाय..गाय मुझे दूध दे। तो गाय बोली मेरे लिए घास ला। तो चूहा किसान के पास गया, किसान...किसान मुझे घास दे। तो किसान बोला, कि मेरे लिए शक्कर ला। तो चूहा गया सेठ के पास, सेठ...सेठ मुझे शक्कर दे। तो सेठ बोला कि मेरे घर से सारे चूहे निकाल दे। चूहा बोला, चलो दोस्त मेरे साथ, मेरी गुफा में। तो सब चूहे निकल पड़े। तो सेठ ने शक्कर दे दी और किसान ने घास दे दिया और गाय ने दूध दे दिया। और चूहे ने दूध बिल्ली को दे दिया। बिल्ली ने चूहे को छोड़ दिया। और सब साथ अपनी गुफा में घुस गए।

● प्रिती बाला, सातवीं, बालागुड़ा, मंदसौर, म. प्र.

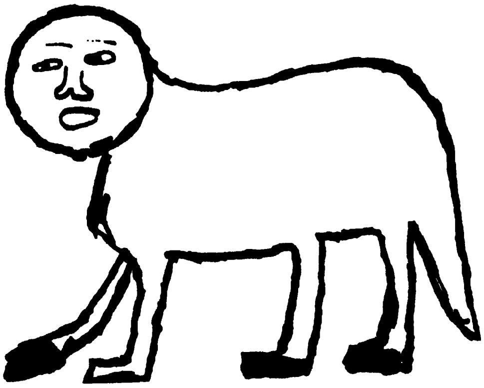

● विकास, सतवास, देवास, म.प्र.

एक कहानी

एक था भालू
वह था चालू।
उसने सोचा
चलकर कुछ खा लूँ।
इतने में आया
खेत का मालिक कालू।
भालू ने सोचा,
अब मैं अपने आप को बचा लूँ॥

जितेन्द्र कुमार गुप्ता, आठवीं (जगह नहीं लिखी)

प्यारे पक्षी

प्यारे-प्यारे पक्षी आते
मेरे घर वे रोज़ मँडराते।
खाते हैं वे रोज़ खाना
पड़ता है मुश्किल से लाना।
मैं उनको रोज़ दाना देती
कुछ नहीं उनसे वापस लेती।
फिर मैं कहती अब चले जाओ
जल्दी से कल वापस आओ॥

● **खंजन देसाई, तीसरी, बड़ौदा, गुजरात**

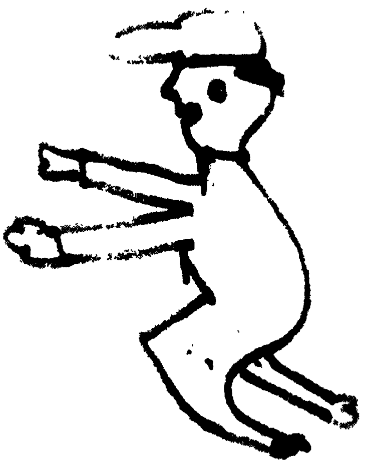

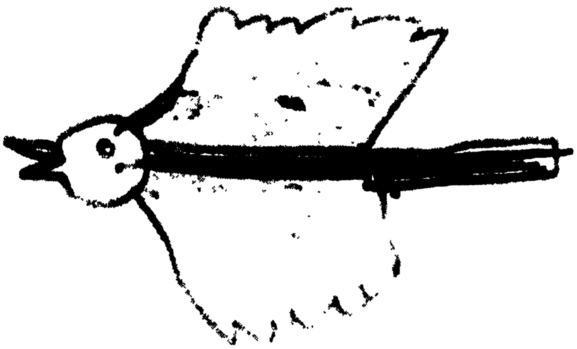

अंकित हरियाले, सतवास, देवास, म. प्र.

तोता

मेरे घर पर एक तोता आया था। वह तार के छोटे पिंजरे में था। तोता थोड़ा बड़ा था। उस पिंजरे में वह चल नहीं पाता था। उसके पंख भी बड़े थे। हम फिर बड़ा पिंजरा लाए। उसके पंख भी थोड़े छोटे कर दिए थे। उसको पिंजरे के अंदर डाल दिया। उसको खाने के लिए हमने टमाटर मिर्ची आदि दिया। वह भागने के लिए अपने पैरों की मदद से पिंजरा खोलना चाहता था।

एक दिन वह अपना सिर पिंजरे से रगड़ रहा था। फिर उसके सिर पर चोट लग गई। मैंने उसके सिर पर दवाई लगा दी। वह बहुत उदास हो गया था। मैंने एक दिन पिंजरा खोला तो वह नीचे भाग गया। फिर उसे पकड़ कर लाई। उसने मुझे काटना चाहा लेकिन मैंने उँगली हटा ली। उसने उड़ने की बहुत कोशिश की लेकिन उसके पंख छोटे भी थे, और मैंने उसे पकड़ भी रखा था। वह दूसरे दिन सुबह ही मर गया।

● **अमृता दुबे, पाँचवीं, देवास, म. प्र.**

आओ झूला झूलें!

विभू और शालू खेल रहे थे। अचानक शालू उठकर खड़ी हो गई। कहने लगी, "अब नहीं खेलना। चलो झूला झूलने चलते हैं।"

विभू भी उठ गया, "हाँ चलो।"

दोनों घर के पास वाले पार्क में गए। वहाँ तरह-तरह के झूले लगे थे। शालू दौड़कर पेड़ पर बँधे झूले के पास पहुँच गई।

"इस पर झूलेंगे।"

"नहीं, उस सी सॉ वाले झूले पर झूलेंगे।" विभू ने कहा।

दरअसल विभू को पेड़ के झूले पर डर लगता था। शालू बहुत ऊँचा ले जाती है न इसलिए। और जब झूला ऊपर जाता है तब विभू के पेट में कुछ-कुछ होने लगता है।

शालू सी-सॉ पर नहीं बैठना चाहती।

तुम जानते हो न सी-सॉ पर कैसे झूलते हैं? जिस तरफ वज़न ज़्यादा होता है उस तरफ नीचे रहता है और जिस तरफ वज़न कम होता है उधर से ऊपर उठ जाता है।

इसलिए शालू सी-सॉ पर नहीं झूलना चाहती है क्योंकि विभू का वज़न ज़्यादा है। वह शालू को ऊपर उठा देता है।

थोड़ी देर ना नुकर करने के बाद तय हुआ कि दोनों पर थोड़ी-थोड़ी देर झूलेंगे।

पहले दोनों सी-सॉ के पास गए। एक तरफ विभू बैठा दूसरी तरफ शालू। विभू के बैठते ही शालू ऊपर उठ गई। उसने कसकर झूले की पटली को पकड़ लिया। फिर अचानक विभू झूले पर से उतर गया। शालू भड़ से एकदम नीचे आ गई। शालू को बहुत गुस्सा आया। वह रोने लगी। तभी सी-सॉ के पास से आवाज़ आई, "रोओ मत, मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ।"

शालू ने सी-सॉ की तरफ देखा, "क्या तुम बोले?"

"हाँ, सुनो। विभू को कहो कि वह थोड़ा आगे की तरफ सरककर बैठे। और तुम थोड़ा पीछे की तरफ सरककर बैठना।" सी-सॉ ने कहा।

"इससे क्या होगा?" शालू ने पूछा।

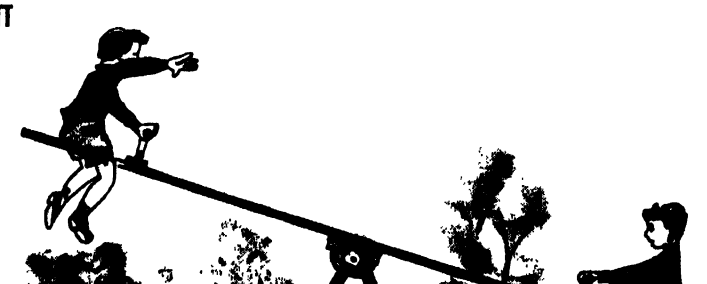

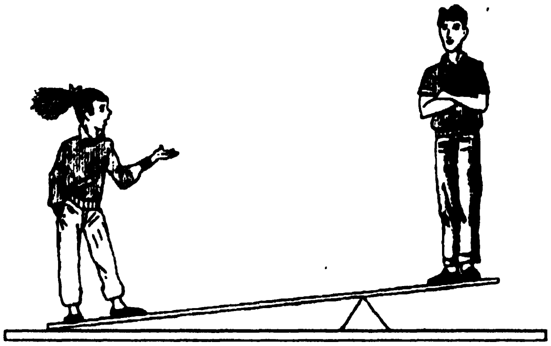

“ऐसा करके देखो, फिर विभू तुम्हें ऊपर नहीं उठा पाएगा।”

शालू ने विभू को बुलाया, “चलो विभू फिर से झूलते हैं। लेकिन एक बात माननी पड़ेगी।”

विभू ने सोचा सी-सॉ पर झूलना है चाहे कोई भी बात माननी पड़े, “हाँ हाँ चलो।”

शालू ने विभू को सी सॉ के तिकोने के ज़्यादा पास बैठने को कहा। वह खुद दूसरी तरफ तिकोने से बहुत दूर, लगभग आखिरी सिरे पर बैठी।

अब तुम सोचो क्या हुआ होगा!

झूलों पर हर कोई एक न एक बार ज़रूर ही झूला होता है। झूले भी कई तरह के होते हैं। अक्सर बड़े मेलों में कई तरह के झूले लगे होते हैं। एक होता है रोलरकोस्टर। इसमें बैठे हुए लोग आगे-पीछे, ऊपर-नीचे सब तरफ घूमते हैं। कई बार तो बिल्कुल उल्टे भी हो जाते हैं फिर भी गिरते नहीं। तुम कभी ऐसे झूले में बैठे हो? देखने में तो बड़ा डर लगता है लेकिन मज़ा भी बहुत आता है।

चलो तुम बताओ अब तक कितने झूलों में बैठे हो? कैसे-कैसे झूलों में बैठे हो? कैसा अनुभव रहा? ये सब हमें लिखकर भेजना और चित्र भी बनाओ तो बहुत अच्छा। तो फिर अगले किसी अंक में अपने झूले के अनुभव चकमक में पढ़ना।

कविता सुरेश

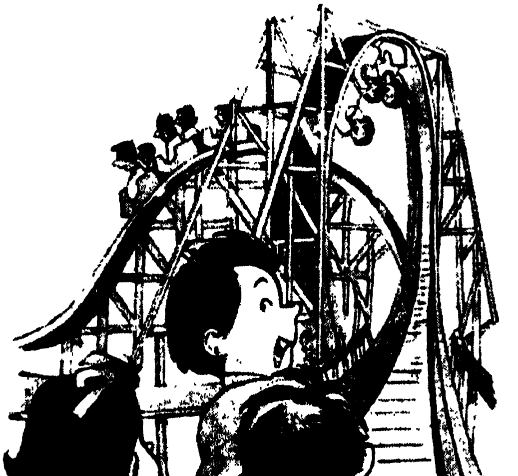

सी-सॉ ने ऐसा क्यों कहा?

दरअसल सी-सॉ झूले में एक लम्बी पट्टी होती है जो बीच में एक तिकोने आधार पर टिकी होती है। इस पर दोनों तरफ बराबर वज़न होगा तो पट्टी संतु[illegible] रहेगी। अगर वज़न बराबर नहीं होगा तो एक तरफ ऊपर और दूसरी तरफ नीचे रहेगा। यदि वज़न बराबर नहीं है तो पट्टी संतुलित करने के लिए जिसका वज़न ज़्यादा है उसे आगे सरककर बैठना होगा और जिसका वज़न कम है उसे पीछे सरककर बैठना होगा। सी-सॉ बिल्कुल तराजू के सिद्धांत की तरह काम करता है। क्या तराजू का सिद्धांत तुमने पढ़ा है?

बर्फीले गड्ढे में चार दिन

● योगेशचन्द्र शर्मा

वह बर्फ से ढका हुआ एक पहाड़ी स्थान था। चारों तरफ बर्फ थी और उस पर बड़ी सावधानी से आगे बढ़ रहा था लैरी रिची। उसके जूतों के नीचे लकड़ी के खाँचे लगे हुए थे, ताकि उसके पैर इधर-उधर न फिसल जाएँ। ज़मीन की टोह लेने के लिए उसके हाथ में एक डण्डा भी था, जिससे बर्फ के अन्दर का ठोसपन देखकर वह धीरे-धीरे अपने कदम रख रहा था। सर्दी से बचने के लिए उसने शरीर को गर्म वस्त्रों से ढका हुआ था।

पूरी सावधानी के बावजूद लैरी रिची एक स्थान पर चूक ही गया। उसे ठोकर लगी और वह गिरकर आगे लुढ़क लगा। लुढ़कने के साथ ही उसे ऐसा लगा जैसे बर्फ की ऊपरी परत टूट गई हो और वह किसी गहरे अँधेरे में डूब रहा हो। थोड़ी ही देर बाद वह छपाक की आवाज़ के साथ पानी में गिर पड़ा।

कुछ समय तक तो लैरी रिची की समझ में ही नहीं आया कि कहाँ क्या हो गया? फिर उसने अपने चारों तरफ देखा। ऊपर लगभग दो मीटर लम्बे तथा एक मीटर चौड़े एक सुराख में से बहुत हल्की-सी रोशनी आ रही थी। लैरी रिची सहज ही समझ गया कि वह उस सुराख से ही लुढ़ककर इस गड्ढे में आ गिरा है। गड्ढा लगभग चार-पाँच मीटर गहरा था। इतनी ऊँचाई से गिरने पर भी लैरी रिची को कहीं कोई विशेष चोट नहीं आई थी। कारण था उसका लगभग आधा मीटर गहरे पानी में गिरना। गड्ढे के चारों तरफ की दीवारें सीधी, सपाट और चिकनी थीं। इसका अर्थ यह हुआ कि उस गड्ढे में से निकलना लैरी रिची के लिए सरल नहीं था। उसने गड्ढे की दीवारों को भली प्रकार टटोलकर और अपनी आँखों पर ज़ोर देकर वस्तुस्थिति को समझने की कोशिश की। उसने देखा कि गड्ढे के दोनों तरफ सँकरे-से रास्ते भी थे। इन्हीं में एक तरफ से पानी आ रहा था और दूसरी तरफ पानी जा रहा था। ये रास्ते इतने बड़े नहीं थे कि कोई व्यक्ति खड़े होकर उनमें चल सके। किसी तरह लैरी रिची ने झुककर उनमें से एक रास्ते में प्रवेश किया और यह देखने की कोशिश

तीसरे दिन सुबह से ही रिची ने अपने प्रयास प्रारंभ कर दिए। उसे बार-बार लगता कि अब वह शायद कभी भी इस गड्ढे से बाहर नहीं निकल सकेगा। लेकिन...

की कि क्या उससे बाहर निकला जा सकता है? लेकिन थोड़ा ही आगे बढ़ने पर उसका दम घुटने लगा। गहन अँधकार में उसे कुछ भी दिखलाई नहीं दिया। फिर वह इसी प्रकार दूसरे रास्ते में आगे बढ़ा तो वहाँ भी यही स्थिति थी। स्पष्ट ही वह पहाड़ी के अन्दर छुपी हुई कोई कंदरा थी... इससे लैरी रिची को वहाँ किसी जंगली जानवर के आने की भी आशंका होने लगी। अब यह भी स्पष्ट हो गया कि लैरी रिची वहाँ से केवल ऊपर के सुराख के द्वारा ही बाहर निकल सकता था। अन्यथा वहाँ गड्ढे में पड़े-पड़े ही उसकी मृत्यु निश्चित थी।

यह घटना नवंबर 1982 की है। स्थान था अमरीका की कैराकेड पर्वतमाला तथा माउंट हुड की तराई का। पैंतीस वर्षीय लैरी रिची को पहाड़ों में घूमने का और खतरों से खेलने का शौक था। वह अक्सर अपनी छुट्टियाँ बिताने के लिए बर्फीले पहाड़ों पर ही भ्रमण किया करता था। अपने इस भ्रमण में वह अनेक बार मुसीबतों का सामना कर चुका था। लेकिन इस बार वह जिस मुसीबत में फँसा था, वैसी मुसीबत तो उस पर कभी भी नहीं आई थी। आसपास मीलों तक कोई मनुष्य भी नहीं था, जो उसकी सहायता करता।

लैरी रिची के सफरी झोले में कुछ सूखा भोजन था। झोला उसकी कमर पर सुरक्षित बँधा हुआ था, उसने उसी में से थोड़ा-सा भोजन निकालकर खाया और पानी पीकर समस्या पर विचार करने लगा। उसके नीचे बहने वाला पानी अत्यन्त शीतल था, जिससे उसके पैर अकड़ने लगे थे, इसी समय उसने अपने पैरों पर ध्यान दिया तो पता चला कि लुढ़ककर गिरते समय उसके पैरों के जूते तथा लकड़ी के खांचे भी कहीं गिर गए हैं। उसने अपने हाथों से पानी में इधर-उधर उन्हें ढूँढने की कोशिश की, लेकिन असफल रहा।

लैरी रिची को अचानक याद आया कि उसके सफरी झोले में एक नौ मीटर लम्बी रस्सी भी है। उसने उसे निकाला और कुछ सोचने लगा। गड्ढे में धीरे-धीरे अँधेरा होने लगा था। उसने अपनी घड़ी पर नज़र डाली। संध्या होने को थी। इसलिए जल्दी ही कुछ करना आवश्यक था। उसने रस्सी के एक छोर पर पत्थर का टुकड़ा बाँधकर उसे इस उम्मीद के साथ ऊपर उछाला कि शायद वह कहीं किसी वृक्ष या चट्टान में अटक जाए। उस स्थिति में वह रस्सी की सहायता से बाहर निकल सकता था। वह बार-बार रस्सी को ऊपर उछालता रहा। लेकिन उसे अपने उद्देश्य में सफलता नहीं मिली।

धीरे-धीरे रात गहराने लगी। अब यह आशंका थी कि अँधेरे में रस्सी से बँधा पत्थर वापस उसके सिर पर गिरकर उसी को चोट न पहुँचा दे। दूसरी तरफ रात गुज़ारने की भी समस्या थी। ठण्डे पानी में खड़े-खड़े अब तक उसके पैर काफी अधिक अकड़ चुके थे। रात भर इसी तरह पानी में खड़े रहना सम्भव नहीं था।

गड्ढे में एक तरफ किसी वृक्ष की मोटी जड़ का एक हिस्सा बाहर निकला हुआ था। लैरी ने कुछ सोचा और अपनी रस्सी को दोहरा करके उसी से बाँध दिया। अब नीचे एक झूला-सा तैयार हो गया था। लैरी ने उसमें नीचे की तरफ गाँठ लगा दी, जिससे वह पानी से कुछ ऊपर हो गया। लैरी ने इसी पर बैठकर रात व्यतीत करने का निर्णय लिया। जहाँ तक कंदरा में से किसी जंगली जानवर के आने की आशंका का प्रश्न था, वह विवश था। उस आशंका को रोकने का कोई उपाय नहीं था। इसलिए सब कुछ भाग्य पर छोड़कर वह उस झूलेनुमा रस्सी पर बैठ गया। लैरी ने अपने सफरी झोले को खोला और उसमें अपने पैरों को छुपाकर उन्हें कुछ गर्मी देने की कोशिश करने लगा।

किसी तरह ऊँघते हुए रात व्यतीत हो गई। सुबह होते ही लैरी ने रस्सी में पत्थर बाँधकर ऊपर फेंकने का सिलसिला पुनः शुरू कर दिया। बार-बार असफलता मिलने पर भी वह निराश नहीं हुआ। दिशा बदल-बदलकर वह रस्सी ऊपर फेंकता। कभी लगता जैसे रस्सी कहीं किसी वस्तु से अटक गई है। लेकिन अगले ही क्षण वह हल्के से झटके के साथ वापस गड्ढे में आ गिरती। लैरी ने अपने बचे हुए सूखे भोजन से नई शक्ति प्राप्त की और फिर रस्सी फेंकने में जुट गया। धीरे-धीरे फिर रात होने लगी और लैरी को वृक्ष की जड़ के सहारे अपनी रस्सी लटकाकर रात गुज़ारनी पड़ी।

तीसरे दिन सुबह से ही लैरी रिची ने फिर अपने प्रयास प्रारम्भ कर दिए। उसे बार-बार लगता कि अब वह शायद कभी भी इस गड्ढे से बाहर नहीं निकल सकेगा। लेकिन हिम्मत हारकर बैठने से तो काम नहीं चलता। जब तक शरीर में प्राण है, तब तक प्रयत्न तो करना ही था। अपने साथ वह जो सूखा भोजन लाया था, वह भी अब समाप्त हो चुका था। इसलिए तीसरे दिन उसे केवल पानी पीकर ही अपना काम चलाना पड़ा।

शरीर काफी कमज़ोर हो चुका था और कड़ाके की सर्दी उसके साहस को बार-बार कुचलने की कोशिश कर रही थी। अचानक ही गड्ढे में ऊपर से पानी गिरने लगा। लैरी ने ऊपर की तरफ देखा। ज़ोरों से बरसात हो रही थी। अब एक नई आशंका पैदा हो गई कि कहीं बरसात के पानी से गड्ढे में भी पानी का स्तर न बढ़ जाए। लेकिन वह कर भी क्या सकता था? सौभाग्य से

बरसात थोड़ी ही देर में बन्द हो गई।

लैरी ने अपने प्रयत्न फिर शुरू कर दिए। संध्या के समय उसे लगा, जैसे रस्सी से बँधा पत्थर कहीं मज़बूती से अटक गया है। लैरी ने खींचकर देखा। सब कुछ ठीक था। वह धीरे-धीरे रस्सी पकड़कर ऊपर चढ़ने लगा। लेकिन मुश्किल से एक-डेढ़ मीटर ही बढ़ा कि रस्सी की पकड़ छूट गई और रस्सी सहित वह वापस पानी में जा गिरा। लैरी को अपनी इस असफलता से दुख हुआ, लेकिन उसमें नई आशा का संचार भी हुआ। वह आशा करने लगा कि अगली बार शायद रस्सी कुछ अधिक समय तक उसका वज़न सम्भालने की स्थिति में हो सके। यह तीसरी रात भी लैरी को उसी अँधेरे गड्ढे में बितानी पड़ी।

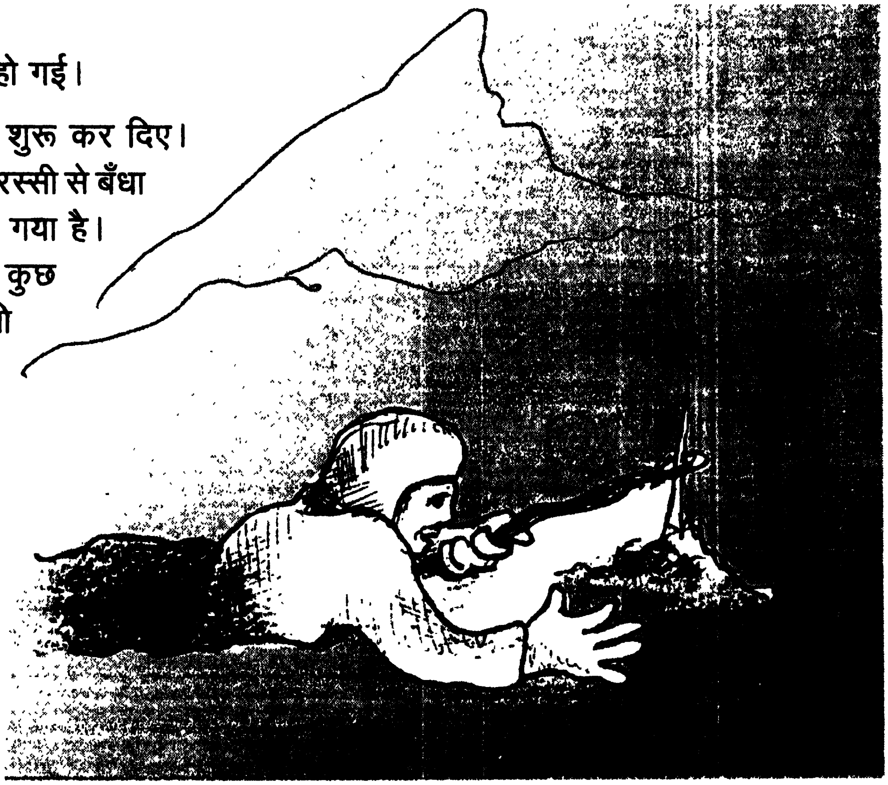

चौथे दिन लैरी रिची ने रस्सी को बार-बार उसी तरफ फेंकना शुरू किया, जिस तरफ वह पिछले दिन अटकी थी। खाने के लिए आज भी उसके पास कुछ नहीं था। भूखे पेट ही वह अपने काम में लगा रहा।

लगभग दोपहर में उसकी रस्सी पुनः कहीं अटक गई। उसने बहुत धीरे-धीरे रस्सी पर चढ़ना शुरू किया, ताकि कहीं किसी झटके से रस्सी वापस न आ जाए। सर्दी की अकड़न तथा भूख के कारण उसके हाथ-पैर में अधिक शक्ति भी नहीं रही थी। इस बार लैरी के भाग्य ने उसका साथ दिया। रस्सी से चिपककर वह धीरे-धीरे बढ़ता हुआ गड्ढे के ऊपर आ गया और वहाँ निढाल होकर गिर गया। कुछ समय तक वह इसी तरह पड़ा रहा। फिर हिम्मत करके वह उठा।

उसकी मंज़िल अभी काफी दूर थी। बर्फ से ढकी इस पहाड़ी पर किसी की सहायता प्राप्त होने की कोई सम्भावना नहीं थी। इधर-उधर ढूँढने पर उसे अपने जूते भी मिल गए। जूतों के अन्दर काफी बर्फ भी जम गई थी। उसने बर्फ निकालकर जूते पहन लिए और धीरे-धीरे कभी चलते हुए और कभी घिसटते हुए नीचे सड़क की तरफ बढ़ने लगा।

सड़क पर उसे अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। उधर से एक ट्रक गुज़रा तो लैरी ने इशारा करके उसे रोक लिया। ट्रक की अगली सीट पर बैठकर उसने कुछ गरमाहट महसूस की। ट्रक ड्राइवर को अपने साथ घटी दुर्घटना की चर्चा करते हुए लैरी कह रहा था कि अगर वह हिम्मत हार बैठता और लगातार प्रयत्न नहीं करता तो उस गड्ढे से कभी भी बाहर नहीं निकल पाता।

सभी चित्र : सुधा मेहता

एक मज़ेदार खेल

जोकर के चेहरे

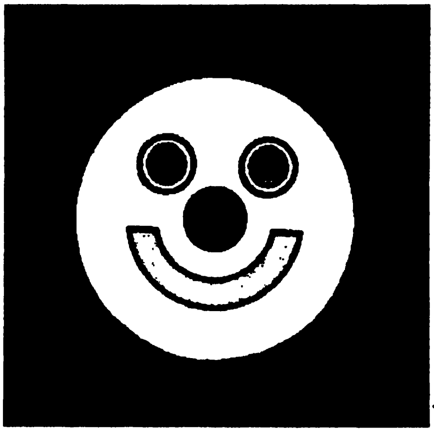

चित्र-1

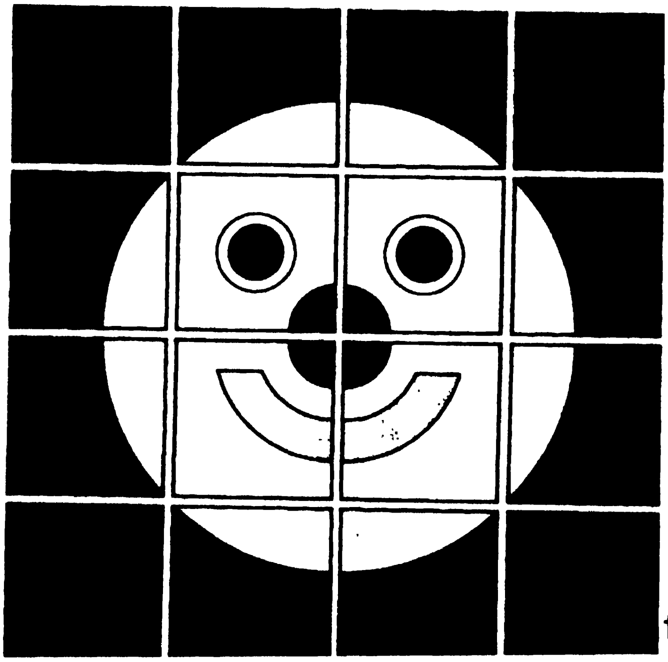

चित्र-2

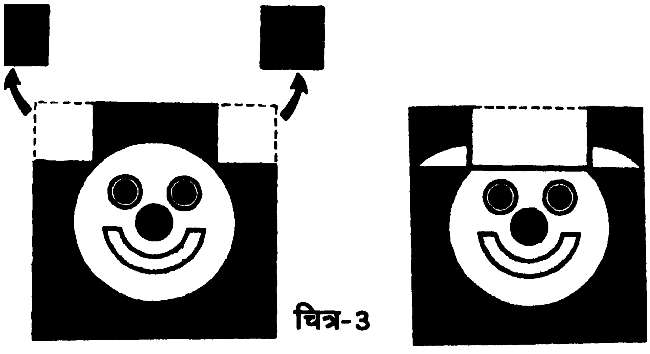

चित्र-3

यह एक बिल्कुल आसान और मज़ेदार खेल है। एक चेहरे के चित्र से कई तरह के चेहरे बना सकते हो। कुछ नमूने यहाँ दिए जा रहे हैं। बाकी तुम अपने मन से बनाओ।

इसके लिए तुम्हें मोटी कार्डशीट का एक टुकड़ा, कैंची, पेंसिल और स्केच पेन या रंगीन पेंसिल चाहिए।

पहले ये सारी चीज़ें जुगाड़ लो। अब काम शुरू करते हैं।

1. सबसे पहले कार्डशीट में से एक वर्गाकार (चारों तरफ से बराबर) टुकड़ा काट लो। ये वर्गाकार टुकड़ा कम से कम 12 सेंटीमीटर लम्बा-चौड़ा होना चाहिए। वैसे तुम चाहो तो इससे भी बड़ा वर्ग ले सकते हो।

2. वर्गाकार कागज़ पर चित्र-1 की तरह चेहरे की आकृति बना लो। चेहरे में अपने मन पसंद रंग भर लो। (वैसे तुम अपनी पसंद का कोई और चेहरा भी बना सकते हो)

3. जब चेहरा बनाने का काम पूरा हो जाए तो वर्ग के 16 बराबर-बराबर टुकड़े कर लो। यानी 16 छोटे वर्ग बना लो। (चित्र-2)

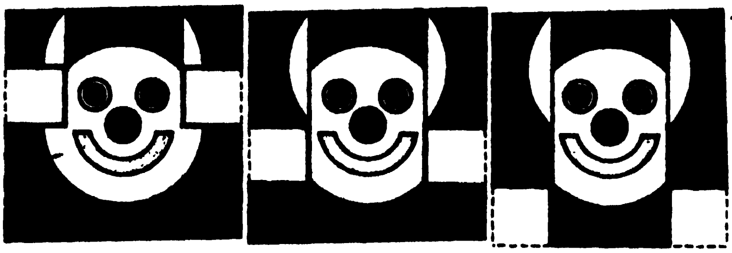

चित्र-4

4. खेल शुरू करने से पहले अपने 16 छोटे वर्गों पर पीछे की ओर 1 से 16 तक नम्बर लिख लो।

5. अब देखो चित्र-4 में चेहरे बना कर दिखाए गए हैं। इसे देखकर तुम समझ सकते हो कि छोटे वर्गों को किस तरह बदलना है।

6. चित्र-5 और 6 में कई और चेहरे दिखाए गए हैं। इन्हें बनाने की कोशिश करो।

चित्र-5

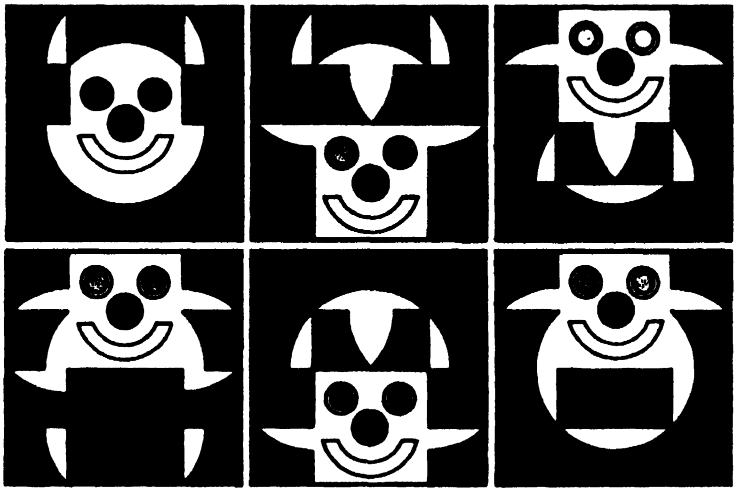

चित्र-6

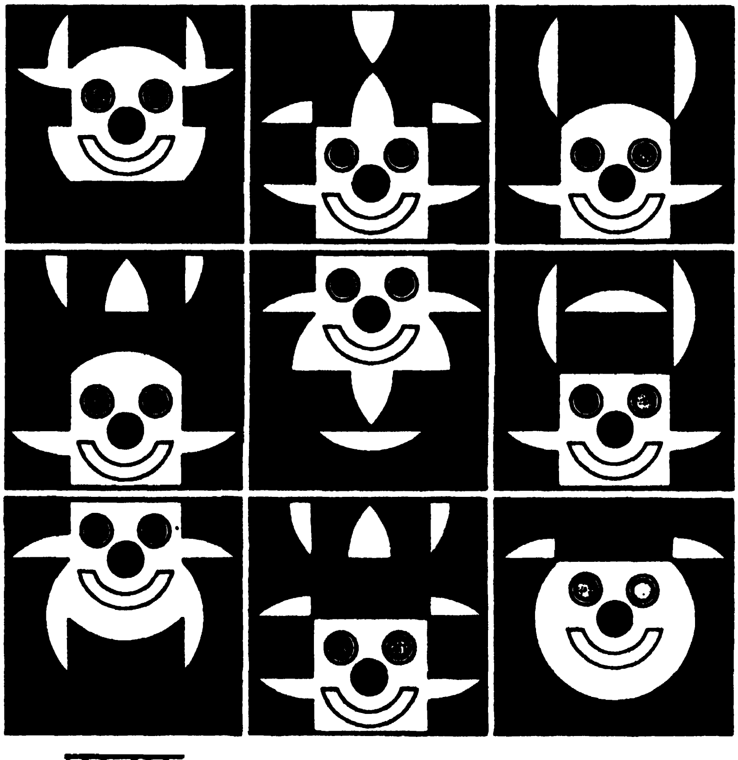

खास बात

अगर तुम यही चेहरा बना रहे हो तो बीच के चार छोटे वर्गों को मुख्य चित्र की तरह ही रखना। उनमें आँख, नाक और मुँह है न इसलिए। बाकी वर्गों को हिलाकर नए चेहरे बनाओ।

तुम किसी और तरह के चेहरे को बनाकर भी कोशिश करना। हो सकता है किसी दूसरे चेहरे में बीच के वर्ग भी हिला सको।

कहानी

चुहिया

सलोनी को अभी ठीक से बोलना नहीं आता। एक या दो अक्षर वाले शब्द ही ज़्यादा अच्छे ढंग से बोल पाती है। तीन अक्षर वाले शब्दों को दो अक्षरों में कम करके बोल पाती है या बीच वाला अक्षर बदलकर बोलती है।

चार अक्षर वाले शब्दों को तीन अक्षरों में कम करके बोल पाती है। अपनी कोशिश से वह सही ही बोलती है। उसे अपने आप में भी ऐसा ही लगता है, पर......

अपना नाम उसके मुँह से ऐसे निकलता है, 'सोनी।' भाई सरस का नाम ऐसे निकलता है, 'सस।' कबूतर निकलता है – 'कूतर।' स्कूटर निकलता है – 'कूटर।'

सलोनी कमरे में घूम रही है। कुछ गुनगुना रही है। मुँह बन्द है, पर चल रहा है। उसके बाएँ हाथ में कटोरी थमी है।

भुजिया (बारीक खारे) के कुछ महीन-महीन टुकड़े उसके ओंठों पर चिपके हैं। कुछ टुकड़े फर्श पर बिखर गए हैं। मामा की नजर उस पर पड़ती है, 'यह क्या कर रही हो?'

सलोनी मामा की ओर देखने लगती है। ऐसे, जैसे वे बुद्धू हों।

वे फिर कहते हैं, 'गन्दा कर रही हो?'

'नई!' कहकर सोचती है, 'ये तो एकदम बुद्धू हैं।'

मामा झुककर उसकी आँखों में आँखें डालते हैं। हाथ से जमीन पर बिखरे टुकड़ों की ओर इशारा करते हैं, 'कौन खाएगा इन्हें?'

'चुइया!'

यह कहकर वह फिर अपने काम में लग जाती है। मामा शरमाकर मुस्कुराते हैं। ऐसे, जैसे उसकी तारीफ कर रहे हों।

● रावेन्द्र कुमार 'रवि'
● चित्र : कैलाश दुबे

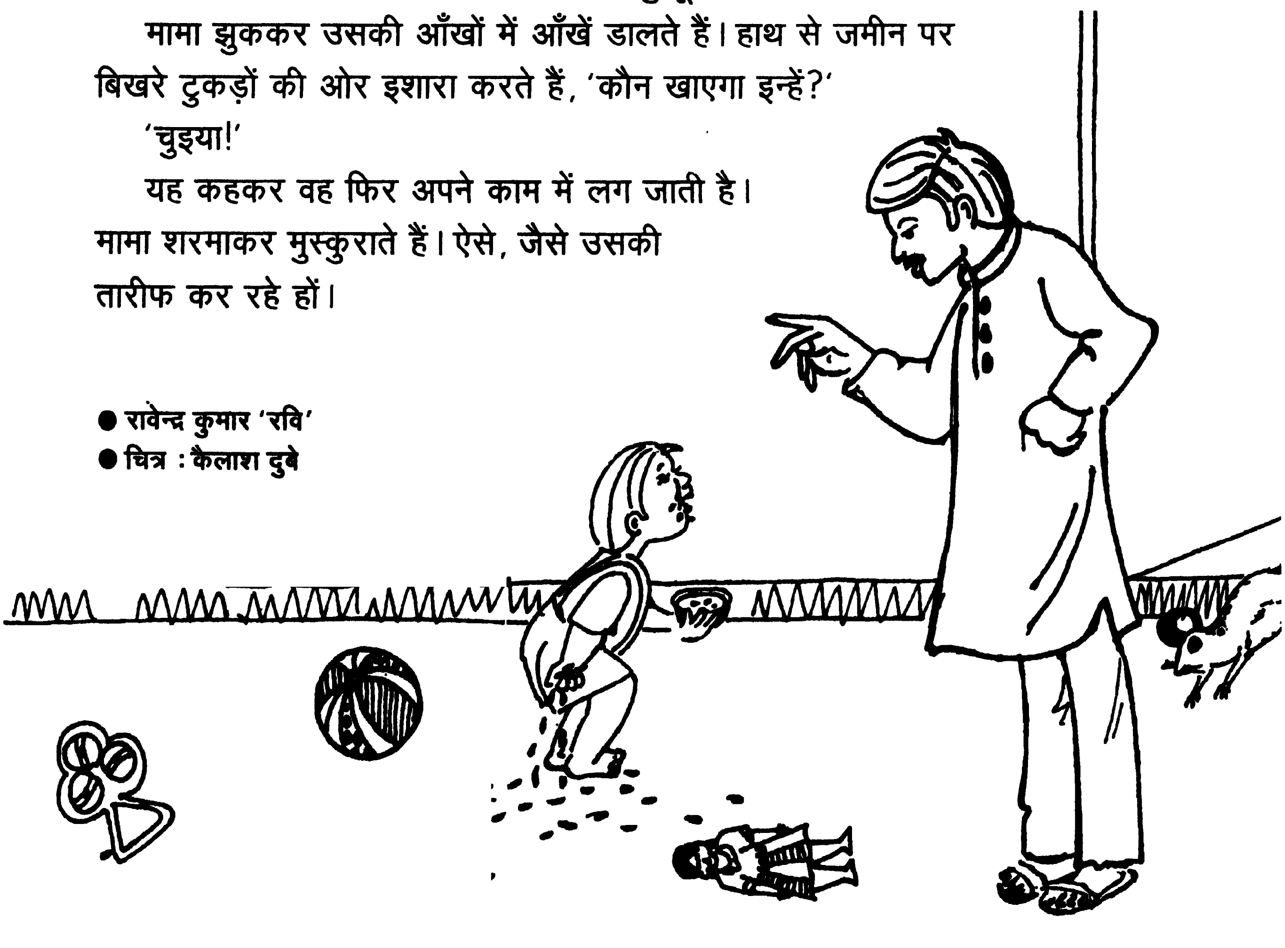

चिड़ियाघरों की कहानी

जानवरों को पालने और उनको प्यार करने का शौक बहुत पुराने समय से ही चला आ रहा है। प्राचीन मिस्र के राजा अन्य इलाकों के जानवरों को अपने यहाँ लाने के लिए शिकारी भेजते थे। ऐसे जानवरों को पहले विशेष पार्कों में रखा जाता था, जिससे वे अपने आपको मिस्र की जलवायु के अनुसार ढाल सकें। खुशी के अवसरों पर इन जानवरों के जुलूस निकाले जाते थे। हाथियों, ऊँटों और यहाँ तक कि शेरों को भी रथ खींचना सिखाया जाता था। बिल्लियों, चीतों और सिंहों से शिकार कराए जाते थे।

ऐसा कहा जाता है कि लगभग तीन हज़ार साल पहले, मध्य-पूर्व एशिया के देशों पर राज करने वाले, राजा सोलोमन ने हज़ारों हिरन, बाज, तोते, मोर, घोड़े, बंदर आदि पाल रखे थे। वह समय-समय पर पड़ोसी देशों के राजाओं के साथ जानवरों की अदला-बदली भी करता था। लगभग उसी काल में चीन के सम्राट, वेन वांग ने अपने पालतू जानवरों के लिए 1500 एकड़ क्षेत्र में एक बड़ा पार्क बनवाया था। उसे वे 'लिंग-यू' यानी 'बुद्धि का बगीचा' कहते थे। उसमें राज्य के कोने-कोने से इकट्ठे किए गए तरह-तरह के जानवर रखे जाते थे।

साथ ही जीव-जंतु पालने के शौकीन अनेक लोग उस समय भी इन जीवों के बारे में हर बात ध्यान से देखते और उन्हें लिखते थे।

प्राचीन यूनान में भी शासकों और धनवानों को जानवर पालने और उनका अध्ययन करने का शौक था। वहाँ कई सौ साल पहले से ही देश-विदेश के कई किस्मों के जीव-जंतु पाले जाते थे। साथ ही वहाँ के लोगों को जीव-जन्तुओं की स्वाभाविक प्रवृत्ति, गुणों और आदतों के बारे में नई-नई बातें सीखने का मौका मिलता था। इसलिए अरस्तू ने उस समय, आज से लगभग दो हज़ार तीन सौ साल पहले, अपने ग्रंथ 'जानवरों का इतिहास' में जीव-जंतुओं के बारे में लिखा था।

सिकंदर ने अनेक देश जीते थे। वह अपने विजय अभियान के दौरान जीते गए देशों के विचित्र जानवरों को अपने देश यूनान भेजता रहता था। सिकंदर की मृत्यु के बाद उसके राज्य के कई टुकड़े हो गए। उसका एक सरदार, टॉलमी प्रथम के नाम से मिस्र की गद्दी पर बैठा। टॉलमी प्रथम ने ही 'सिकंदरिया' शहर की स्थापना की थी। साथ ही वहाँ उसने एक चिड़ियाघर भी बनाया था। उसमें भारतीय हाथी, सिंह, चीते, तोते, मोर, घोड़े आदि शामिल थे।

प्राचीन रोम के शासकों को भी जीव-जंतु पालने का शौक था। वे कुछ ऐसा कर दिखाना चाहते थे, जो किसी भी व्यक्ति ने पहले कभी नहीं किया हो। केवल प्रदर्शन के लिए रोम के अनेक अमीर व्यक्तियों ने भी अपने छोटे-छोटे चिड़ियाघर बना रखे थे।

ईसा के जन्म से लगभग सौ वर्ष पहले रोम के एक सरदार, मारकस टेरेनटियस वारो का चिड़ियाघर सबसे बड़ा और सबसे विचित्र था। दरअसल उसमें जानवरों की अपेक्षा पक्षियों की संख्या अधिक थी।

इनमें मुर्गी और बत्तख से लेकर अनेक दुर्लभ जातियों के पक्षी थे। वारो, उनकी सही देख-रेख करता था। उन्हें बढ़िया खाना देता, उनका अध्ययन करता परंतु जब उसका मन करता उन्हें मारकर खा भी जाता था। उसने हज़ारों की तादाद में कबूतर पाले थे, जिनमें से कुछ प्रदर्शन के लिए थे और कुछ खाने के लिए और कुछ संदेशवाहक का काम करने के लिए।

रोम के निवासियों के अपने-अपने चिड़ियाघरों में हाथी भी होते थे। ये आमतौर पर युद्ध के दौरान पकड़े गए होते थे और युद्ध-विराम के प्रतीक के रूप में प्रदर्शित किए जाते थे। बाद में वहाँ के लोगों का जानवर पालने का उद्देश्य बदलने लगा। रोम के शासक हिंसक पशु-सिंह, शेर, चीते, भालू आदि ही मुख्य रूप से पालने लगे थे और उन्हें शौक के लिए नहीं वरन आपस में लड़ाने और लड़ाई को देखने के लिए पाला जाता था। इसके लिए बड़े-बड़े अखाड़े भी बनाए गए थे।

ईसा के जन्म के लगभग 30 वर्ष पहले गद्दी पर बैठे रोम के शासक सीज़र को भी अपना चिड़ियाघर बनाने का बहुत शौक था। उसके चिड़ियाघर में बहुत से हाथी, शेर, चीते और अन्य जानवर थे। उसे इन जानवरों को आपस में लड़वाना बहुत पसंद था। अक्सर वह ऐसी लड़ाइयाँ आयोजित कराता रहता था। कहा जाता है कि सीज़र के ही शासन काल में जानवरों की इन आपसी लड़ाइयों में 3,500 से भी अधिक जानवर मर गए थे।

इसके बाद तो रोम में शासकों तथा अमीरों द्वारा बनाए जाने वाले चिड़ियाघरों का आकार और बड़ा होता गया। उनके जानवरों को भी अखाड़ों में लड़ाया जाता था। साथ ही यह मान्यता भी प्रचलित हो गई थी कि खास त्यौहारों पर शेर, चीते, हाथी जैसे जानवरों की बलि देने से देवता प्रसन्न हो जाते हैं। इसके कारण हज़ारों जानवर मारे गए।

साथ ही राजाओं को एक और बहुत क्रूर शौक था। अखाड़े में शेर, भैंसे या ऐसे ही किसी खूँखार जानवर के साथ मनुष्य की लड़ाई कराना। ये मनुष्य या तो युद्ध में पकड़े गए शत्रुपक्ष के सैनिक होते थे या सज़ायाफ्ता लोग या गुलाम।

जहाँ तक पक्षियों का प्रश्न था उनकी हालत भी बहुत खराब हो गई थी। एक तरफ तो उन्हें बढ़िया खाना दिया जाता था और उनकी पूरी देखभाल की जाती। दूसरी तरफ दावतों में उन्हें बड़ी संख्या में मारकर उनका माँस खाया जाता। अगर दावत किसी राजा के सम्मान में हो तो एक दिन में ही सैकड़ों पक्षियों की हत्या की जाती थी।

ईसाई धर्म अपनाने वाले पहले रोम सम्राट ने इस शौक पर प्रतिबंध लगा दिया। बाद में केवल राजाओं और चर्च द्वारा चलाए जाने वाले चिड़ियाघर ही रह गए पर वे छोटे होते गए, उनमें जानवरों की विविधता और संख्या कम होती चली गई। अब उनमें जानवरों की देख-रेख भी पहले जैसी नहीं होती थी। हाँ, रोक लगने

के बाद जानवरों को आपस में लड़वाना और मारकर खाना कम हो गया।

आठवीं शताब्दी में यूरोप के सबसे बड़े सम्राट, चार्ल्स मैगन के अलग-अलग शहरों में, तीन चिड़ियाघर थे जिनमें वह विदेशी पक्षी, बाज़ और कभी-कभी बड़े जानवर रखता था। चार्ल्स मैगन के बाद स्विट्ज़रलैण्ड में सेंट गैलन के पादरियों ने एक छोटा पर बहुत अच्छा चिड़ियाघर बनाया था। इसी प्रकार इंग्लैण्ड के राजा हेनरी प्रथम ने बारहवीं शताब्दी में एक चिड़ियाघर स्थापित किया था।

प्राचीन रोम या यूनान के चिड़ियाघरों के मुकाबले का जो चिड़ियाघर था, वह तेरहवीं शताब्दी में सिसली और येरूशलम के राजा फ्रेडरिक द्वितीय द्वारा स्थापित किया गया था। फ्रेडरिक द्वितीय प्रकृति प्रेमी था। वह पक्षी वैज्ञानिक भी था और बाज़ों के लालन-पालन तथा उनसे काम कराने की उसे जानकारी अच्छी थी। साथ ही वह स्तनधारी जीवों का अध्ययन करना भी पसंद करता था। उसने तीन स्थाई चिड़ियाघर स्थापित किए थे। साथ ही उसने एक 'चल-चिड़ियाघर' बनवाया था। वह जहाँ जाता था यह चल-चिड़ियाघर भी वहाँ ले जाया जाता था। उसमें शेर, हाथी, चीते और बंदर जैसे जीव थे।

उसके बाद यूरोप के अन्य देशों - फ्रांस, फ्लोरेंस, पुर्तगाल, साइप्रस आदि में भी चिड़ियाघर बनने लगे। इनमें इटली के नेपल्स का चिड़ियाघर सबसे बड़ा था। पर उस समय संसार का सबसे बड़ा चिड़ियाघर चीन में था जिसे वहाँ के तत्कालीन राजा कुबलई खाँ ने बनवाया था। उसका ज़िक्र मार्को पोलो ने अपनी यात्रा के वर्णनों में किया है। उसमें हाथियों, गेंडों, दरियाई घोड़ों, शेरों और बंदरों के साथ अनेक किस्म के पक्षी तथा मछलियाँ भी थीं। कहा जाता है कि कुबलई खाँ के पास इतने बाज़ थे कि उनकी देख-रेख के लिए हज़ार व्यक्तियों की ज़रूरत होती थी।

चौदहवीं और पंद्रहवीं शताब्दी में यूरोप में कोई इतना बड़ा चिड़ियाघर नहीं था, जो कुबलई खाँ के चिड़ियाघर का मुकाबला कर सके।

इसी समय में लोग नए-नए प्रदेशों में जाने और वहाँ के जीव-जन्तुओं का अध्ययन करने लगे। दरअसल वह पहला अवसर था जब आधुनिक वैज्ञानिक तरीकों से पशु-पक्षियों का अध्ययन शुरू हुआ। जंतुओं का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करने के लिए चीन के चिड़ियाघर 'बुद्धि के बगीचे' का उपयोग किया गया था। यह पहला उदाहरण था। टॉलमी द्वितीय द्वारा सिकंदरिया में बनाए गए चिड़ियाघर में भी जानवरों के अध्ययन के प्रयत्न किए गए थे।

आधुनिक युग में यह काम फिर से चालू किया गया वर्साइ, फ्रांस के चिड़ियाघर से। शरीर में रक्त संचार प्रणाली की खोज करने वाले विलियम हार्वे ने भी अपने प्रयोग चिड़ियाघरों के जानवरों पर ही किए थे। टाइसन और काउपर नामक वैज्ञानिकों ने जंतुओं की शरीर रचना सम्बंधी जानकारी के लिए अपने प्रयोग चिड़ियाघर से लाए गए जानवरों पर किए थे।

पंद्रहवीं शताब्दी के बाद जब यूरोपवासी अन्य देशों की यात्राओं से लौटते तो अपने साथ उन देशों की विचित्र वस्तुओं के साथ-साथ वहाँ के विचित्र जीव-जंतु भी लाते थे। निश्चय ही इन जीव-जंतुओं को अपने-अपने देश के चिड़ियाघरों को दे दिया जाता था। इससे यूरोप के चिड़ियाघर में अन्य देशों, विशेष रूप से 'नई दुनिया' के देशों के जीव-जंतुओं की संख्या काफी हो गई। इन जंतुओं में ऐसे जीवों की संख्या काफी थी जो 'पुरानी दुनियावासियों' ने कभी देखे ही नहीं थे। इन जीवों में से कुछ अपने नए 'घरों' में आसानी से बस गए पर कुछ जीवित ही नहीं रह पाए।

इसके बाद यूरोप के देशों में ही नहीं वरन् मिस्र, दक्षिण अफ्रीका, ईरान और भारत में भी नए चिड़ियाघरों की स्थापना हुई। अब प्राणीविज्ञान का अध्ययन वैज्ञानिक तरीक़ों से होने लगा था। वास्तव में विज्ञान की विविध शाखाओं में बहुत प्रगति हो चुकी थी। अतएव चिड़ियाघरों के निर्माण के तरीके भी बदल चुके थे। अब जानवरों को पालने के बेहतर तरीके मालूम हो चुके थे।

ऑस्ट्रिया की राजधानी वियना में, 1759 में स्थापित चिड़ियाघर, स्कानब्रून, को सबसे पहला आधुनिक चिड़ियाघर माना जाता है। इसे रोमन सम्राट फ्रांसिस प्रथम ने बनवाया था। इसका निर्माण 1752 में आरम्भ हुआ था और यह 1759 में पूरा हुआ। इसके बनने की भी एक कहानी है।

इसे फ्रांसिस प्रथम ने अपनी प्रिय रानी मारिया टरेसा, जो हंगरी की राजकुमारी थी, के लिए बनवाया था। इसके बनाने का उद्देश्य यह था कि सम्राट और उसकी पत्नी नाश्ता करते समय, अपने आसपास हाथी, जेब्रा, ऊँटों को टहलते देख सकें। इसलिए चिड़ियाघर के बीच में एक जलपान गृह बनवाया गया। उसके चारों ओर इस प्रकार बड़े-बड़े घर बनाए गए मानो चक्के की धुरी से स्पोक निकल रहे हों। इन घरों में जानवर रखे जाते थे। घरों की ओर पेड़ों की लम्बी-लम्बी कतारें थीं। चिड़ियाघर में बहुत अच्छा बगीचा और एक पक्षीशाला भी थी। 1765 में फ्रांसिस प्रथम के पुत्र जोसफ द्वितीय ने इसे जन साधारण के लिए खोल दिया था।

मज़ेदार बात यह है कि यह चिड़ियाघर आज भी है। आज इसमें आधुनिक सुविधाएँ - जानवरों के लिए अस्पताल, विद्यार्थियों के लिए कक्षाएँ, शोध करने वालों के लिए पुस्तकालय, फिल्म बनाने की सुविधाएँ, दर्शकों के लिए जलपान गृह आदि मौजूद हैं पर इसका मूल रूप वही है जैसा फ्रांसिस प्रथम के समय था।

स्कानब्रून की स्थापना के बाद तो चिड़ियाघरों का ताँता ही लग गया। उसके बाद ब्रिटेन में सेंट जेम्स पार्क और क्यू गार्डन बनाए गए। क्यू गार्डन में देश-विदेश के सब प्रकार के पेड़-पौधे उगाने और उनका अध्ययन करने पर अधिक बल दिया जाता है। इससे वह वनस्पति शास्त्रियों के लिए 'तीर्थस्थान' तो बन गया पर इसी कारण कुछ लोग उसे चिड़ियाघर मानते ही नहीं है।

अगर सेंट जेम्स पार्क और क्यू गार्डन को चिड़ियाघर की श्रेणी में न गिनें तो दूसरा चिड़ियाघर, स्कानब्रून के कुछ वर्ष बाद ही, स्पेन की राजधानी मेड्रिड में बनाया गया। उसके बाद पेरिस तथा यूरोप के अन्य शहरों में चिड़ियाघर बनाए गए।

आज संसार भर में चिड़ियाघरों की संख्या लगभग 800 से अधिक हो गई है। इनमें ऐसे चिड़ियाघरों की संख्या काफी है, जिनकी स्थापना के सौ से भी अधिक वर्ष हो गए हैं। शताब्दी मनाने वाले इन चिड़ियाघरों में हमारे देश के भी कुछ चिड़ियाघर शामिल हैं। ●●●

चित्र देखकर कविता/ कहानी लिखो

अप्रैल के अंक में एक चित्र दिया था। इसे देखकर तुम्हें कविता या कहानी लिखनी थी। तुम्हारी भेजी रचनाओं में से चुनकर तीन रचनाएँ छाप रहे हैं। इनके रचनाकारों को छह माह तक चकमक उपहार में भेजी जाएगी।
तुम भी लिख सकते हो। उठाओ कागज़ कलम और लिख डालो। रचना के साथ – *कविता/कहानी लिखो* – ज़रूर लिखना।

कहानी एक लड़के और हाथियों की

सचिन नाम का एक बहुत ही अच्छा और आज़ाद ख्याल का लड़का था। वह सब का भला सोचता था और बड़ों का आदर करता था। इसलिए सब उससे बहुत प्यार करते थे। उसके पिताजी सर्कस में काम करते थे। और माताजी अध्यापिका थी। वह पाँचवीं कक्षा का छात्र था जिसकी अध्यापिका उसकी माताजी थी। और उसकी माताजी बच्चों में बिल्कुल भेदभाव नहीं करती थीं। जिससे सब बच्चों को प्रथम आने का सुख मिल सकता था। एक दिन उसने कक्षा में सोने का पिंजरा और चिड़िया की कहानी सुनी। उसे एक दिन पता चला कि सर्कस का मालिक हाथियों पर बहुत बुरा व्यवहार करता है और उन्हें भरपूर भोजन भी नहीं देता था। तो उसे चिड़िया की कहानी याद आई और उसने उन्हें छुड़ाने की ठान ली। एक दिन उसने योजनानुसार क्रूर मालिक की कैद से हाथियों को आज़ाद कर उन्हें जंगल पहुँचा दिया और अपने परिवार के साथ प्यार से रहने लगा। और जानवरों की मदद करता रहा।

● पुनीत जैन, आठवीं, दिल्ली

देखो देखो, बढ़िया सीन
चले आ रहे हाथी तीन
साथ इनके सहमा-सहमा
चला आ रहा रामाधीन
दो तोते डाल में बैठे
अपनी बातों में हैं लीन
आसमान में उड़ते पक्षी
चले आ रहे देखो तीन
हम तो शहरों के निवासी
हमसे ये ज़्यादा स्वाधीन।

● सीमा तिवारी, सारंगगढ़, रायगढ़, छत्तीसगढ़

दौड़ लगाने आया बिल्लू,
हाथी बोला पहले प्यास बुझा लूँ।
तीन हाथियों से वो आगे,
हाथी तेज-तेज हैं भागे।
चिड़ियाँ देख-देख मुस्काएँ,
मेंढक कूदें और मुस्काएँ।
बादल सोचे कि वर्षा बरसाऊँ,
बिल्लू सोचे कि मैं अब जीत जाऊँ।

● श्रुति शर्मा, चौथी (जगह नहीं लिखी)

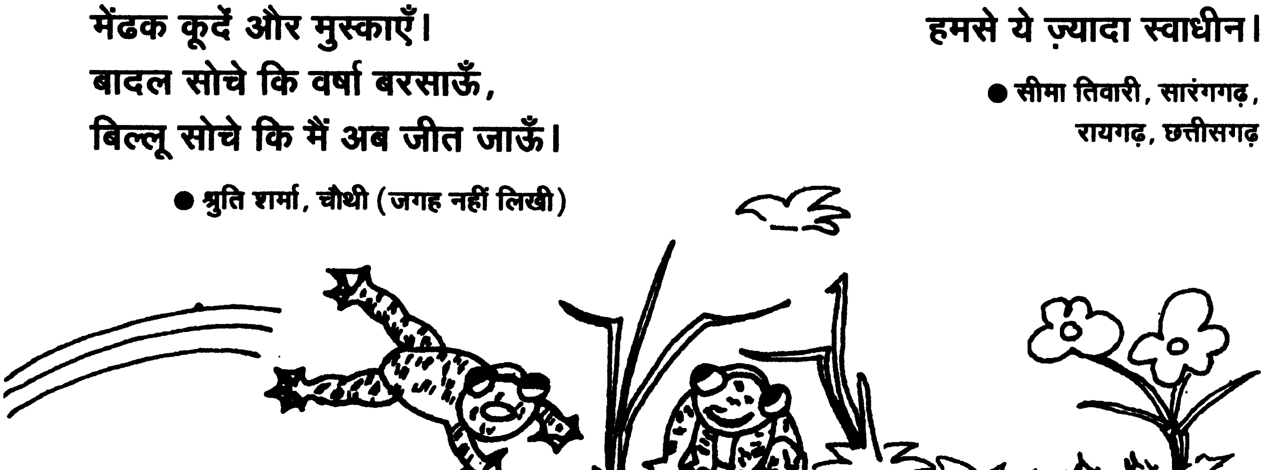

● चित्र : आशीष नगरकर

खून क्या है?

लाल रक्त कोशिकाएँ। लाखों लाल रक्त कोशिकाएँ हर पल बनती है और इतनी ही लगभग मरती जाती हैं।

हमारे शरीर के हर हिस्से को ठीक ठाक तरीके से काम करने के लिए कुछ भोजन और ऑक्सीजन की ज़रूरत होती है। खून इसी भोजन और ऑक्सीजन को पूरे शरीर में फैलाता है। यानी खून हमारे शरीर का परिवहन तंत्र है या यूँ कहें कि आवाजाही का तरीका है। एक वयस्क के शरीर में तकरीबन पाँच लीटर खून होता है।

किससे बना है खून?

खून कई किस्म की कोशिकाओं से मिलकर बना होता है। हर कोशिका का अपना अलग काम होता है। खून की एक बूँद में लाखों कोशिकाएँ होती हैं।

इन कोशिकाओं में 95 फीसदी लाल रक्त कोशिकाएँ होती हैं। ये लाल रक्त कोशिकाएँ खाना व ऑक्सीजन ढोती हैं। ये कोशिकाएँ शरीर के विभिन्न हिस्सों से कार्बन डायऑक्साइड भी इकट्ठा करती हैं तथा इसे फेफड़ों तक पहुँचाती हैं जिसे हम साँस द्वारा छोड़ते हैं। इनके कारण ही खून लाल रंग का होता है।

खून में सफेद रक्त कोशिकाएँ भी होती हैं। इनकी संख्या खून में 2 प्रतिशत ही होती है। खून के बाकी हिस्से में प्लेटलेट्स नामक कोशिकाएँ होती हैं। ये कोशिकाएँ खून में थक्का जमाने का काम करती हैं।

कभी तुम्हारी उँगली कटी हो तो तुमने देखा होगा कि थोड़ी देर में ही खून का बहना रुक जाता है। यह इन्हीं प्लेटलेट्स के कारण मुमकिन होता है। जिन व्यक्तियों के खून में ऐसी कोशिकाएँ नहीं होती या कम होती हैं, यानी जिनका खून बहना रुकता नहीं है वे एक बीमारी हीमोफीलिया से प्रभावित होते हैं।

क्या तुम जानते हो?

अगर हमारे शरीर की सारी खून वाहिकाओं को एक के बाद एक जोड़ दें तो इनकी लम्बाई कितनी होगी?

शायद तुम्हें नामुमकिन लगे... लेकिन ये एक इतनी बड़ी रस्सी के बराबर होंगी जिससे पूरी दुनिया के दो चक्कर लगाए जा सकते हैं।

और! महज़ दो मिनट में खून की एक बूँद पूरे शरीर में घूम फिर कर फिर से हृदय तक आ जाती है। है न कमाल की बात!

खून की कई किस्म की कोशिकाएँ –

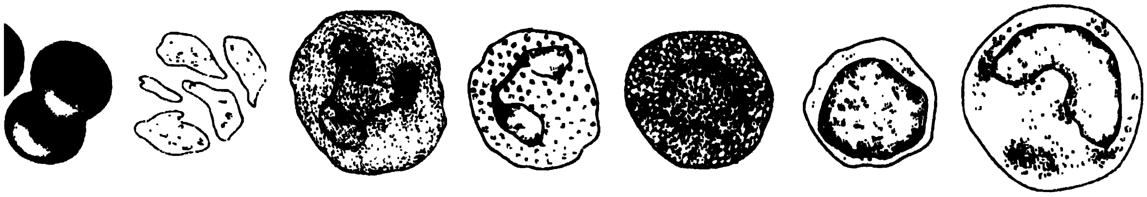

चक्करबाज़ी खून की

ये रक्त कोशिकाएँ हमारे शरीर में एक द्रव के साथ मिलकर घूमती फिरती हैं जिसे प्लाज़्मा कहते हैं। रक्त कोशिकाएँ और प्लाज़्मा, सबकुछ मिलकर ही खून कहलाता है।

खून नलियों में बहता है। बिल्कुल उसी तरह, जिस तरह घरों में नालियों के सहारे पानी घूमता है। इन नलियों को रक्त-वाहिनियाँ कहते हैं।

हृदय एक पम्प की तरह काम करता है जो हर क्षण खून को बहाते रहने में मदद करता है। इस तरह हृदय खून को फेफड़ों तक पहुँचाता है।

वे रक्त-वाहिनियाँ जो ऑक्सीजन मिला खून शरीर के हर हिस्से तक पहुँचाती हैं धमनी कहलाती हैं। तुमने शरीर के कुछ खास हिस्सों में नब्ज़ को महसूस किया

ज़रा दौड़ो

और फिर रुककर उसी कलाई की धक-धक को महसूस करो.. और फिर आधा मिनिट में अपनी धड़कनें गिनो।

तुम्हें पता चलेगा कि दौड़ने के बाद तुम्हारे हृदय की धड़कनें कुछ तेज़ हो गई हैं। क्योंकि दौड़ने के लिए तुम्हें ज़्यादा ऊर्जा की ज़रूरत होती है और इसी ज़रूरत के चलते हमारी पेशियों को अतिरिक्त ऑक्सीजन और भोजन की ज़रूरत होती है। पेशियों की ज़रूरत को पूरा करने के लिए हृदय जल्दी-जल्दी धड़कता है। जिससे खून कोशिकाएँ भी तेज़ी से अपना काम करती हैं।

दौड़ना बंद करने के बाद भी कुछ देर तक धड़कनें तेज़-तेज़ चलती रहती हैं क्योंकि इस दौरान शरीर में ज़्यादा मात्रा में कार्बन डायऑक्साइड जमा हो चुकी होती है। इसलिए उसे बाहर करने के लिए शरीर को कुछ और देर तक काम करना पड़ता है।

होगा। गले में या फिर कलाई में.....। इस हर धड़कन में हृदय खून को बाहर धकाता है। चाहो तो तुम अपनी कलाई पर उँगली रखकर देखो। और पता करो आधा मिनिट में यह धक-धक कितनी बार होती है। इससे तुम पता कर सकते हो कि एक मिनिट में तुम्हारा हृदय कितनी बार धड़कता है।

वे खून कोशिकाएँ जो कार्बन डायऑक्साइड को फेफड़ों तक वापिस ले जाती हैं शिरा कहलाती हैं। हाँ इनमें धड़कन महसूस नहीं होती है। ज़रा सोचो तो क्यों?

क्या करता है खून ?

खून के कई काम हैं। एक तो यह हमें ऑक्सीजन और भोजन पहुँचाता है। दूसरे यह कार्बन डायऑक्साइड जैसी गैर ज़रूरी चीज़ें बाहर निकालता है। यह बीमारियों से लड़ने में हमारी मदद करता है। हमारे शरीर में ताप संतुलन भी बनाए रखता है। इसी से घाव भरने में मदद मिलती है। खून हॉर्मोन आदि ज़रूरी रासायनिक तत्व भी शरीर के विभिन्न अंगों तक पहुँचाता है। ये हॉर्मोन ही हमारे शरीर को बताते हैं कि किसी खास परिस्थिति में क्या करना है। कुछ हॉर्मोन हमारे शरीर की वृद्धि को भी नियंत्रित करते हैं। जहाँ ज़रूरत होती है खून वहाँ ये ज़रूरी हॉर्मोन भी पहुँचाता है।

खून की नलियाँ

●●●

फॉर्म 4 (नियम – 8 देखिए)

मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के सम्बंध में जानकारी

प्रकाशन का स्थान	भोपाल	सम्पादक का नाम	विनोद रायना
प्रकाशन की अवधि	मासिक	राष्ट्रीयता	भारतीय
प्रकाशक का नाम	विनोद रायना	पता	एकलव्य ई–7/453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल – 462 016
राष्ट्रीयता	भारतीय		
पता	एकलव्य ई–7/453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल – 462 016	उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है	रेक्स डी. रोज़ारियो भारतीय एकलव्य ई–7/453 अरेरा कॉलोनी, भोपाल – 462016
मुद्रक का नाम	विनोद रायना		
राष्ट्रीयता	भारतीय		
पता	एकलव्य ई–7/453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल – 462 016		

मैं विनोद रायना यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

विनोदरायना
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

1 जुलाई, 2002

अपना शरीर नापो

बित्ता, अँगुल, हाथ और कदम से हम कई चीज़ें नापते हैं। – जैसे मेज़, तख्ता, कमरे की लम्बाई।

※ अपने बित्ते से अपने पैर का तलुआ नापो। हमारा अंदाज़ है कि बित्ता और तलुआ दोनों के नाप बराबर होंगे।

※ तलुए को अँगुल से नापो। कितने अँगुल लम्बा है तुम्हारा तलुआ?

※ बित्ते से अपने पैर की एड़ी से घुटने तक नापो। अनुमान यह है कि ये लम्बाई पाँच बित्ते होगी।

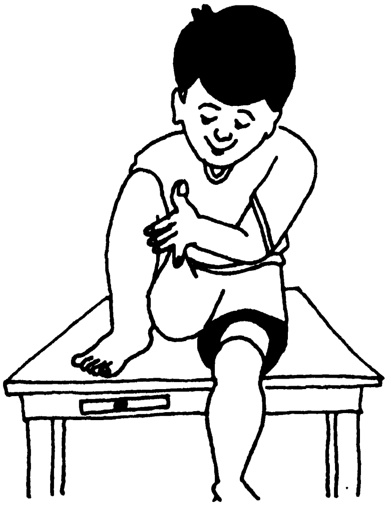

※ बीच की उँगली से कोहनी तक अपना हाथ बित्ते से नापो। हमारा अनुमान है कि ये लम्बाई दो बित्ते ही होगी।

※ कलाई से कंधे तक तुम्हारा हाथ कितने बित्ते लम्बा है?

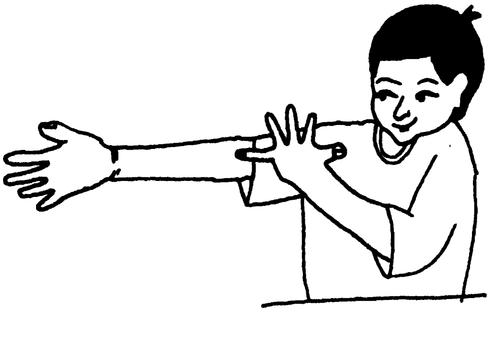

ऐसी तालिका बनाओ।

क्या	कितने बित्ता लम्बा	हमारे कौन-कौन से अनुमान सही निकले?
पैर का तलुआ		
पैर– एड़ी से घुटने तक		
हाथ – कोहनी तक		
हाथ – कंधे तक		

यह नापने के बाद अब शरीर के कुछ और हिस्से नापो।
देखो इनमें से क्या-क्या दो बित्ते से ज़्यादा हैं?
एक कान से दूसरे कान तक की लम्बाई, कलाई की लम्बाई, नाक की लम्बाई, कमर की गोलाई।

अप्रैल अंक के माथापच्ची के हल

1. (5555–555) 1/5

2.

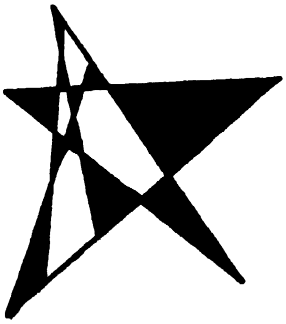

3.

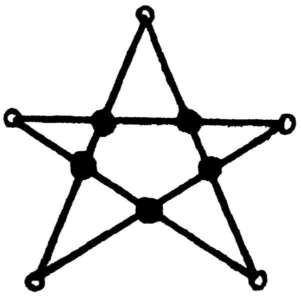

4. 76 त्रिभुज।

मई-जून अंक के माथापच्ची के हल

1.

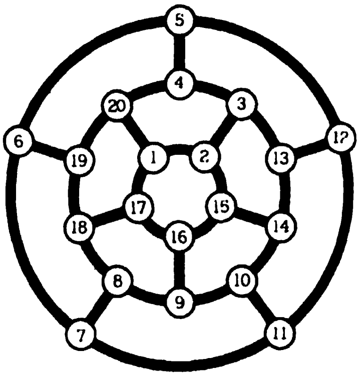

3.

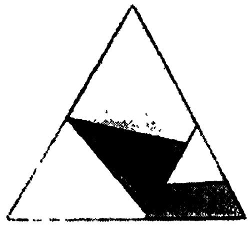

4. –3

5. 2 और 8 नम्बर।

8. पाँच साल में ढाई फुट बढ़ेगा। हाँ लेकिन कील ज़मीन से पहले जितनी ही ऊँचाई पर होगी।

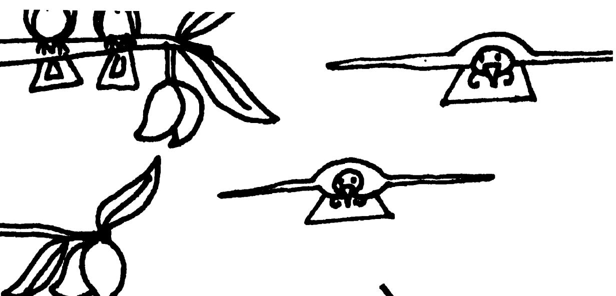

मेरा बाग

पेड उगे हैं, उगी झाड़ियाँ
और उगी हैं बेलें
पेड़ों पर चिड़ियाँ आकर के
रात और दिन खेलें

आएँ फूल और फल आएँ
पत्ते चमचम चमकें
सावन में पेड़ों पर झूले
डाल डाल लें रमकें

बेलों पर, फूलों के ऊपर
तितली नाचे आकर
झाड़ी में गिलहरियाँ घूमें
चीं चीं चीं चीं गाकर,

यही बाग है मेरा सुंदर
कोयल हर दिन आती
कभी आम पर, कभी दूसरे
पेड़ों पर वह गाती

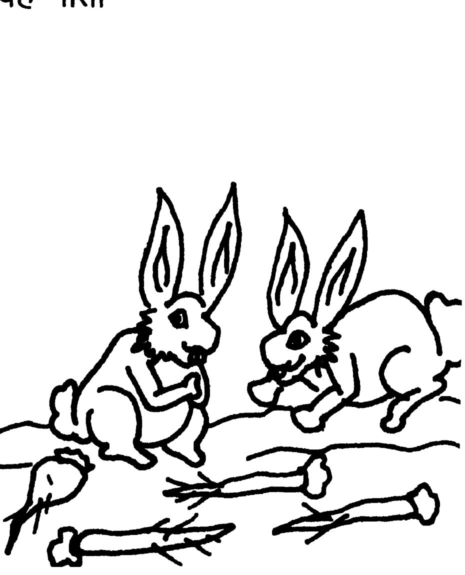

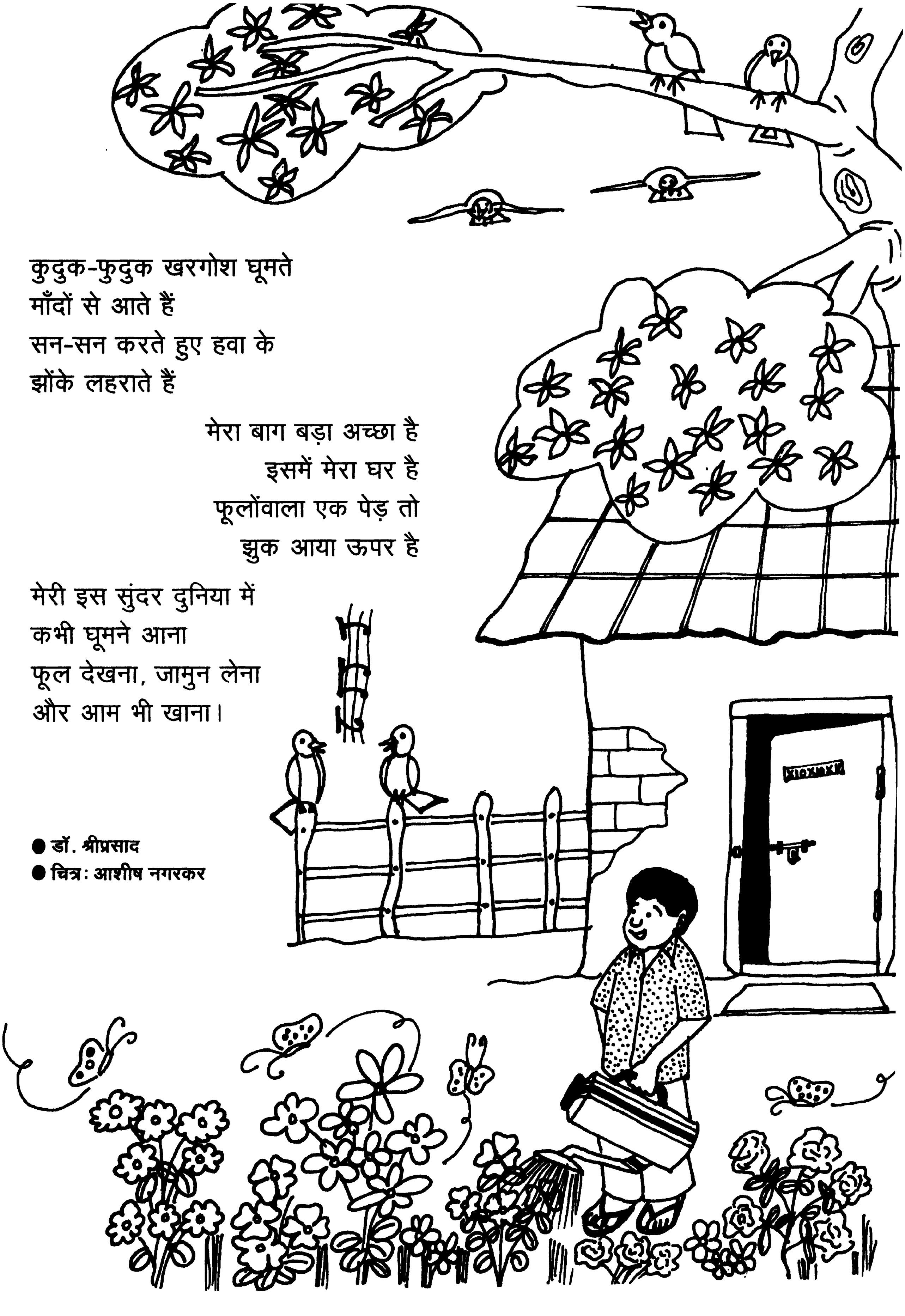

कुदुक-फुदुक खरगोश घूमते
माँदों से आते हैं
सन-सन करते हुए हवा के
झोंके लहराते हैं

मेरा बाग बड़ा अच्छा है
इसमें मेरा घर है
फूलोंवाला एक पेड़ तो
झुक आया ऊपर है

मेरी इस सुंदर दुनिया में
कभी घूमने आना
फूल देखना, जामुन लेना
और आम भी खाना।

● डॉ. श्रीप्रसाद
● चित्र: आशीष नगरकर

बाल कला शिविर, उज्जैन

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी एकलव्य संस्था उज्जैन द्वारा ग्यारह दिन का कला शिविर आयोजित किया गया। शिविर में बच्चों को प्रतिदिन अलग-अलग तरह की चीज़ें बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। शिविर 6 से 16 मई तक चला।

इसमें बच्चों को पेपरबैग बनाना सिखाया। पॉलीथीन का उपयोग न करने की सलाह देकर पॉलीथीन के दुष्प्रभाव के बारे में चर्चा की गई। विज्ञान प्रयोग के लिए होशंगाबाद से श्री बी.पी. मैथिल आए थे जिन्होंने बच्चों को रोचक एवं मज़ेदार प्रयोग करके बताए। श्रीमती अनुपमा रोकड़े और प्रेम मनमौजी ने बच्चों को अलग-अलग प्रकार के खिलौने बनाना सिखाया।

देवास से आए दिनेश शर्मा एवं शोभा शिंगणे ने स्वास्थ्य के बारे में चर्चा की। उपस्थित बच्चों ने स्वयं का विश्लेषण किया।

बच्चों द्वारा 'पानी बचाओ' विषय पर पोस्टर बनाए गए। शिविर के आखिरी दिन सभी बच्चों द्वारा रोज़ाना बनाई गई चीज़ों की प्रदर्शनी एक हॉल में लगाई गई। बच्चों को पुरस्कार स्वरूप प्रमाणपत्र वितरित किए गए। शिविर में लगभग 125 बच्चों ने भाग लिया जो विभिन्न स्कूलों एवं अलग-अलग आयु वर्ग के थे।

रपट : बहादुरसिंह जाधव और विजया भार्गव, उज्जैन

शिविर में भाग लेने वाले बच्चों ने हर रोज़ की अपनी रपट लिखी है, उसमें से कुछ पन्ने।

पहला दिन

कल दिनाँक 6.5.2002 को हमारे शिविर का पहला दिन था। सभी का परिचय कराया गया। फिर हम सभी को सर ने एक कागज़ का झोला बनाना सिखाया। पहले उसकी आकृति टोपी की थी इसलिए सभी ने उसे पहना और हमारे फोटो खींचे गए। फिर हम सभी को सर ने झोले के पकड़ने के बेल्ट को बनाने का तरीका बताया। हम सभी ने बेल्ट बनाया और सभी को बताया कि किस तरह से झोले पर इसे चिपकाते हैं। हम सभी झोला बनाकर बहुत खुश थे। अब प्रेम सर ने हमें उस झोले की सजावट करने को कहा। सभी ने अपने-अपने झोले को सजाया। और रंग-बिरंगे झोले बन गए।

❑ देवेश नाग

दूसरा दिन

कल 7 मई थी और हमारे कला शिविर का दूसरा दिन था। पहले दिन से दूसरे दिन बच्चों की संख्या अधिक हो गई। सभी को परिचय-पत्र दिए गए। सभी ने उन्हें कपड़ों पर अपनी पहचान के रूप में लगा लिया। इसके बाद हम सभी को चिड़िया बनाना सिखाया। सभी को शीट व रंग-बिरंगे कागज़ बाँटे गए। कटिंग सिखाकर चिड़िया का आकार-प्रकार बनवाया गया। उस पर रंगीन कागज़ काटकर लगाए।

❑ मालविका मिश्रा

चित्र : बिंदिया थापर ('सबला' से साभार)

तीसरा दिन

कल शिविर के तीसरे दिन हमने कुत्ता बनाना सीखा। बच्चों की संख्या अधिक होने के कारण सभी बच्चों को टोलियों में बाँट दिया गया। दिए गए फर्मे से सबने अपना कुत्ता काट लिया। देखते ही देखते सब बच्चों ने अपना कुत्ता बना लिया। इसके बाद सब बच्चों ने अपना कुत्ता सजाने के लिए विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ काटीं। इस प्रकार सभी ने अपना कुत्ता बना लिया। अंत में एक फोटो भी लिया गया। जिसमें ज़्यादातर बच्चों ने अपने कुत्ते का प्रदर्शन किया।

❑ **आशु विजयवर्गीय**

पाँचवाँ दिन

आज दिनाँक 10.5.2002 को शिविर का पाँचवाँ दिन था, आज नए टीचर आए थे। उन्होंने विज्ञान के प्रयोग के बारे में समझाया, व हमसे विभिन्न प्रकार के प्रश्न किए। बच्चों ने भी उनसे कई प्रश्न किए जिनके उन्होंने जवाब दिए।

❑ **भौमिक परिहार**

आठवाँ दिन

13 मई, कला शिविर का आठवाँ दिन था। सभी बच्चे समय पर स्कूल में आ गए थे। सभी को बड़ी उत्सुकता थी कि किस प्रकार पॉट के अन्दर के पत्थर निकाले जाएँगे। सर ने बताया कि आरी से काटकर ये पत्थर निकाले जाएँगे। सभी बच्चे टोलियों में बैठ गए और हर टोली में आरियाँ बाँट दी गईं। सभी ने अपना काम शुरू किया। पत्थर निकालने के बाद पॉट को फेविकाल से चिपकाया और उस पर सफेद रंग कर दिया। सर ने पहले बनाए गए पॉट भी बताए। सभी अपने पॉट को सजाने लगे। किसी ने रंग से सजाया तो किसी ने रंगीन कागज़ से। आखिरकार सभी के रंग-बिरंगे पॉट तैयार हो गए। सभी बहुत खुश थे।

❑ **अंकिता केकरे**

नौवाँ दिन

आज नौवाँ दिन है। आज हमने सबसे पहले फूल और पत्तियाँ बनाना सीखा। सभी बच्चों को चार रंग के कागज़ दिए गए – पीला, लाल, नीला, कत्थई। इन रंगों के कागज़ से कमल के फूल बनाए। फिर हमने हरे कागज़ से तीन-तीन पत्तियाँ बनाईं। दो तार दिए गए जिसे मोड़कर हमने गुलदस्ते की तरह बनाया एवं उनके ऊपर कत्थई रंग का कागज़ लगाया गया।

इसी दिन हमने वहाँ एक खेल सीखा। मैडम एवं सर ने सबसे पहले सभी को एक गोले में बिठाया। उन्होंने कहा कि हम एक खेल खेलेंगे। सबसे पहले एक लड़की को दौड़ाया और कहा कि तुम एक तरफ से दौड़ो फिर किसी को भी खो देना। जिस तरफ पहली लड़की दौड़ रही है दूसरी लड़की भी उसी तरफ दौड़ेगी। बीच में दोनों मिल कर नमस्ते कहकर अपना परिचय देंगीं। फिर दोनों तेज़ दौड़कर खाली जगह में बैठने की कोशिश करेंगी। जो पहले उस खाली जगह तक पहुँचेगा वही बैठ जाएगा। जो नहीं पहुँच पाएगा वह फिर दूसरी लड़की या लड़के को खो देगा। इस क्रम से खेल चला। थोड़ी देर बाद खेल बन्द कर दिया गया।

सर ने हमें एक-एक कागज़ दिया। इस पर हमें – हमारा नाम, हमारी कमियाँ, हमारी अच्छाइयाँ लिखना थीं। और हमें अपना चित्र भी बनाना था। जिसका समय 15 मिनट दिया गया। सभी बच्चों ने लिखा। फिर एक-एक बच्चे को खड़े होकर इन सभी बिन्दुओं को पढ़कर सुनाना था। कुछ बच्चों ने बहुत ही अच्छा लिखा एवं कुछ बच्चों ने थोड़ा बहुत ही लिखा। मगर हमें यहाँ खेल-खेल में बहुत ही अच्छी बातें सीखने को मिलीं। फिर हमने अपने पेज सर को दे दिए। मैडम और सर ने भी अपने बारे में बहुत कुछ बताया। फिर सारे बिन्दुओं पर चर्चा की।

❑ **रंजिता वर्मा**

चीचीबाबा के भाई

इस बार विश्व पुस्तक मेले में मैंने एकलव्य द्वारा प्रकाशित कुछ किताबें खरीदीं। उनमें से दो बहुत अच्छी लगीं। और उन दोनों में से भी एक किताब बहुत अच्छी लगी वह है – 'चीचीबाबा के भाई।'

चीचीबाबा एक देश है, वहाँ के दो भाइयों की है ये कहानी। इसमें दो भाई होते हैं। एक का नाम गुरुक और एक का नाम टुरुक। टुरुक हमेशा दाएँ हाथ से सब कुछ करता और गुरुक हमेशा बाएँ से। थोड़ी-थोड़ी देर में उनका झगड़ा हो जाता और थोड़ी ही देर में समाप्त। जब ये दोनों बड़े हुए तब भी झगड़ा चलता रहता है।

एक टौमटौम नाम का चालाक आदमी था। एक दिन गुरुक ने टौमटौम से एक गुलेल खरीदी और टौमटौम को ढेर सारा पैसा दिया। वैसा ही टुरुक ने भी किया। आखिर में गुरुक ने तोप खरीदी और टौमटौम ने ढेर सारा धन ले लिया। टुरुक ने भी सैमसैम से तोप खरीदी। दोनों भाई अलग-अलग देश के राजा हो गए थे और हथियार खरीदने की होड़ में टुरुक और गुरुक हो गए गरीब और टौमटौम हो गया अमीर। चीचीबाबा दो भाईयों के लड़ने-झगड़ने की कहानी है।

इस कहानी के लेखक हैं – डी.पी. सेनगुप्ता और चित्र बनाए हैं – सुमंत सेनगुप्ता ने। और इसको हिन्दी में अनुवाद किया है अरविन्द गुप्ता ने।

ये किताब बहुत अच्छी है। मैंने इसको बड़े मज़े से पढ़ा। आप भी ये किताब ज़रूर पढ़ना।

किताब का नाम – चीचीबाबा के भाई
लेखक – डी.पी. सेनगुप्ता
अनुवाद – अरविन्द गुप्ता
चित्र – सुमंत सेन गुप्ता
प्रकाशक – एकलव्य, भोपाल, म. प्र.
मूल्य – 20 रुपए

● शिवांक, दिल्ली

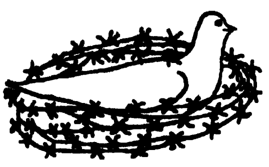

शकार का बनाया चित्र

बच्चों के अधिकारों के लिए दुनिया के बच्चों का पुरस्कार

पिछली बार हमने तुमसे वादा किया था कि हर बार बच्चों के इस पुरस्कार के जजों में से किसी एक के बारे में बताएँगे। तो इस बार शकार कमाल की कहानी उसी के शब्दों में सुनो। शकार जजों के समूह में युद्ध से परेशान शरणार्थी बच्चों का प्रतिनिधित्व करता है।

"जब हमारा पाँच साल तक भागते रहने का सिलसिला शुरू हुआ, मैं छह साल का था। यह तब की बात है जब सद्दाम हुसैन ने हम कुर्दों पर गोलाबारी करना शुरू कर दिया था। हम जैसे लोगों को कुछ तस्करों की मदद से अपने देश से भागकर किसी दूसरे देश में पनाह लेने का मौका मिलता था।

हमारा परिवार भी इसी तरह से भागते हुए रूस की राजधानी मॉस्को पहुँचा। वहाँ हमारा बहुत सारा पैसा बर्बाद हो गया। इतना कि जब हमारे लात्विया नामक देश जाने का इन्तज़ाम हुआ तो पैसों की कमी की वजह से पापा को वहीं मॉस्को में रुक जाना पड़ा। हमारे अलावा भी कई लोग थे कुर्दिस्तान से भागे हुए। लात्विया से कुल 140 लोगों को एक मछली पकड़ने वाली नाव में ले जाया गया। इस नाव से हम स्वीडन पहुँचने वाले

शकार कमाल

थे। स्वीडन हमारे जैसे लोगों को पनाह देता था। परन्तु हमारी नाव तूफान के कारण भटक गई और अगले दिन हमें कुछ सैनिकों ने पकड़ लिया।

हमें लात्विया के ही ओलेन नामक जेल में ले जाया गया। यहाँ हमें दो साल तक बन्द रखा गया। स्वीडन की सरकार अब हमें पनाह देने से इन्कार कर रही थी। ऐसे में एक दिन एक भयानक खबर आई। मेरे पापा को इस बात का इतना बुरा लगा कि हम जेल में बन्द थे और वो हमारे लिए कुछ नहीं कर पा रहे थे कि उन्होंने मॉस्को में खुदकुशी कर ली। मेरी माँ हम बच्चों को जकड़कर रोती रही।

इसके बाद जेल में बन्द सारे बड़ों ने भूख हड़ताल शुरू कर दी। तब बन्दूकधारी सैनिक आ गए और सारे बड़ों को पकड़कर ले गए। मेरी माँ भी उनमें शामिल थी। मैं रोते-रोते उनसे चिपक रहा था ताकि मुझे भी उनके साथ ही ले जाएँ। पर एक सिपाही ने मुझे थप्पड़ मारा और घसीटकर माँ से अलग कर दिया। सारे बड़े लोगों को लात्विया की राजधानी रीगा के बड़े जेल में ले गए थे। यहाँ हम सब बच्चे अकेले उदास बैठे रहते थे या फिर रोते रहते थे। हम 34 दिन तक जेल में अकेले रहे। अब भी उस समय के बारे में सोचूँ तो मेरे दिमाग में एक फिल्म सी चलने लगती है।

आखिरकार स्वीडन ने अपना मन बदला और हमें शरण दी। स्वीडन आकर पाँच साल के बाद फिर से ऐसा लगा कि हम भी इन्सान हैं। लगा कि हमारा फिर से जन्म हुआ है।

जब भी हमारा परिवार एक साथ होता है तो मुझे अपने पापा की कमी बहुत खलती है। पर मैं कहता कुछ नहीं हूँ, इस डर से कि कहीं माँ दुखी न हो जाए।

मेरी इच्छा है कि मेरे पापा की कब्र को भी यहाँ स्वीडन ले आया जाए ताकि हम कभी-कभी उनकी कब्र पर जाकर उनसे मिल सकें।"

तुम्हारी बातें

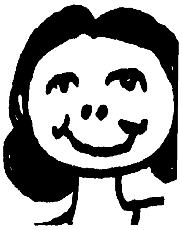

वैसे तो हम हर माह किसी एक विषय पर बच्चों की राय जानने की कोशिश करते हैं। और 'तुम्हारी बात' में छापते हैं। साथ ही कई दोस्त हमें पत्र द्वारा अपने विचार लिखकर भेजते हैं। इस बार अलग-अलग मुद्दों पर तुम्हारे दोस्तों के विचार पढ़ो। सिर्फ पढ़ना ही नहीं, इन पर सोचना और बातचीत भी करना। इनके बारे में तुम क्या सोचते हो, हमें ज़रूर लिखना।

जात का भेदभाव

मेरे मामाजी के गाँव में लोग भेदभाव करते हैं। ऊँची जात वाले पानी पहले भरते हैं और बाद में नीची जात वाले पानी भरते हैं। कभी-कभी मुझे लगता है कि यह भेदभाव नहीं होता तो कितना अच्छा होता। वहाँ नीची जात वालों को मंदिर में पूजा भी नहीं करने देते हैं। और कभी भूल से ऊँची जात वालों के बरतन से नीची जात वाले लोग टकरा जाते हैं तो वह अपने बरतन फिर से माँज के साफ करते हैं। मुझे लगता है कि ये भेदभाव नहीं होना चाहिए।

● एकता सोलंकी, आठवीं, देवास, म. प्र.

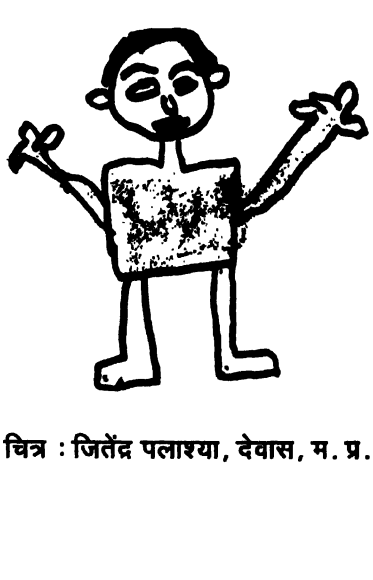

चित्र : जितेंद्र पलाश्या, देवास, म. प्र.

सी.एन.जी.

अप्रैल के महीने से दिल्ली में सी.एन.जी. बसों का चलना आवश्यक हो गया। जिससे मुझे अप्रैल महीने में स्कूल पहुँचने में बहुत परेशानी उठानी पड़ी। मेरा स्कूल मेरे घर से दस किलोमीटर दूर है। मेरा डी.टी.सी. बस का पास भी बना हुआ है। वह भी अब बेकार हो गया है और मुझे टिकिट लेनी पड़ती है क्योंकि डी.टी.सी. की सी.एन.जी. बसें संख्या में बहुत कम हैं। सुबह-सुबह तो एक भी बस नहीं मिलती। मजबूर होकर मुझे प्रायवेट सी.एन.जी. बस में जाना पड़ता है। और जिससे पहुँचने में देर हो जाती थी और कभी-कभी सज़ा भी मिलती है। सरकार से प्रार्थना है कि दिल्ली में डी.टी.सी. की सी.एन.जी. बसें अधिक संख्या में चलवाएँ, जिससे हमें छुट्टियों के बाद स्कूल पहुँचने में परेशानी न हो।

● अनुज, छठवीं, दिल्ली

लड़के और लड़कियों में भेदभाव

हमने देखा किसी-किसी घर में लड़के और लड़कियों में भेदभाव माना जाता है। उनके मम्मी-डैडी सोचते हैं लड़कियों को क्या करना है? सुसराल जाकर चूल्हा ही तो फूँकना है। अगर लड़कियों के माता-पिता चाहें तो लड़कियाँ लड़कों से भी आगे बढ़ सकती हैं।

आजकल ज़माना बदल गया है। और इस बदलते ज़माने के साथ हमें भी बदलना चाहिए। अगर यही सोचकर सब आगे बढ़ें तो लड़के और लड़कियों में कोई भेदभाव नहीं माना जाएगा। और आजकल लड़कियाँ-लड़कों से कदम मिलाकर चल रही हैं। किसी को लड़कों और लड़कियों में कोई भेदभाव नहीं मानना चाहिए।

● **पूजा मित्तल, आठवीं, देवास, म. प्र.**

मेरे सपने

मेरा सपना था कि मैं खूब अच्छी तरह पढ़ लिख लूँ। लेकिन मेरा सपना साकार न हुआ। मैं रोजी-रोटी में दिन रात लगी रहती हूँ। हम बहुत गरीब हैं। मेरा सपना था कि मैं बड़ी होकर डॉक्टर बनूँ। मेरे पिता और मेरा छोटा भाई खेती-बाड़ी करते हैं। मेरी प्यारी सहेली जो कि स्कूल जाती है वो मुझसे कहती – मीना तू भी मेरे साथ स्कूल चल। वहाँ पर मैं तुझे मेरी टीचर से मिलाऊँगी। लेकिन मैंने कहा – मैं अभी नहीं आ सकंती हूँ मुझे अभी बहुत काम हैं।

● **रजनी सालवी, आठवीं, देवास, म. प्र.**

पढ़ाई कैसी हो

इस बार चकमक (मार्च 2002) के अंक मे पढ़ा कि पढ़ाई कैसी होनी चाहिए। मैं सोचता हूँ कि सब पढ़ाई सिर्फ किताबों से नहीं होती। उनको प्रयोग करके देखना होता है। उससे हमें जल्दी समझ में आता है। हमारी सोसायटी में 50 से अधिक पेड़-पौधे हैं। कई के तो हम नाम भी नहीं जानते। बड़े लोग भी नहीं जानते। हममें सवाल पूछने की जिज्ञासा होनी चाहिए। पढ़ने में मज़ा लेना चाहिए।

● **शिवाँक, दिल्ली**

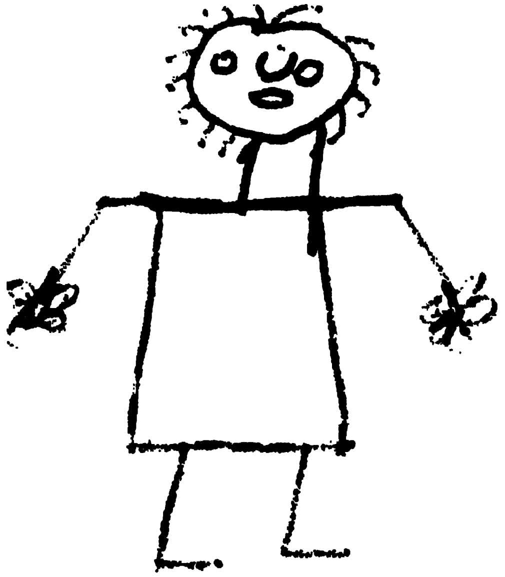

चित्र : तुलाराम, देवास, म. प्र.

माथापच्ची

ये लड्डुओं की दो ढेरियाँ हैं।..न...न... अभी नहीं.. पहले सवाल तो हल करो... फिर उठाना....!
सवाल यह है कि तुम्हें पहली ढेरी के सिर्फ तीन लड्डुओं को उठाकर इस तरह ज़माना है कि दूसरी ढेरी बन जाए!

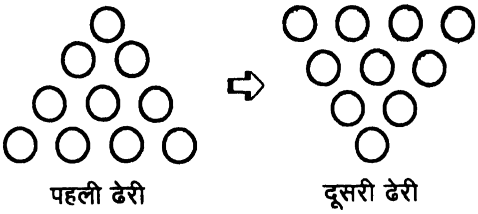

2

तलत, मरम, सरस, कनक.. हज़ारों शब्द होंगे ऐसे! इनकी खासियत यह है कि इनका पहला और आखिरी अक्षर एक ही है और ये सभी अर्थ वाले शब्द हैं। क्या तुम ऐसे ही पाँच शब्द महज़ पाँच मिनिट में ढूँढ सकते हो।

राम और फैज़ल अक्सर साइकिल दौड़ किया करते थे। ये दौड़ दो गाँवों के बीच ही होती थी। इन दो गाँवों के बीच एक गिरिजाघर था। आगे बढ़ने से पहले वे यहाँ थोड़ा सुस्ताते थे। दोनों गाँवों के बीच दस किलोमीटर का फासला था। गिरिजाघर इन दोनों गाँवों के बीच में पड़ता था।

एक बार राम 20 किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से चलकर गिरिजाघर तक पहुँचा। फैज़ल वहाँ पहले ही पहुँच चुका था। राम ने कहा, ''कोई बात नहीं अब मैं बाकी की दूरी इतनी तेज़ रफ्तार से तय करूँगा कि मेरी औसत रफ्तार 40 किलोमीटर प्रति घण्टे हो जाएगी।''

फैज़ल ने कुछ सोचकर कहा, ''यह तो नामुमकिन है.....।''

क्या तुम फैज़ल से सहमत हो?

❹

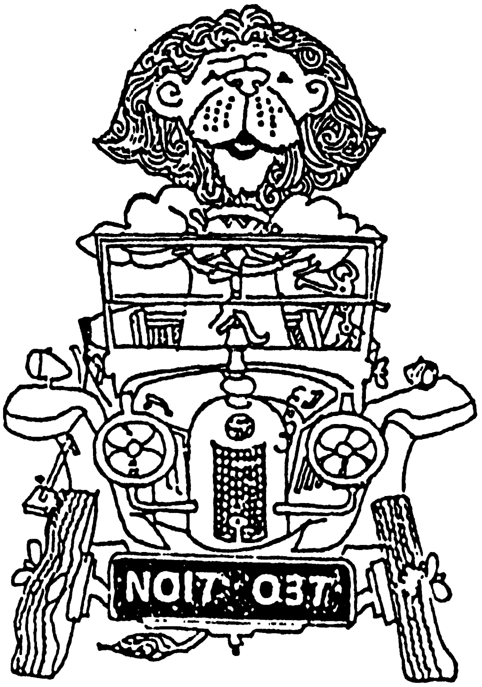

जब से जंगल के जानवरों ने गाड़ियाँ खरीदनी शुरू कर दीं। शेर महोदय को शिकार के लिए खूब दौड़ लगानी पड़ती है। उन्होंने सोचा, 'यार क्यों न मैं भी एक जीप खरीद ही लूँ।' उनकी जीप का नम्बर भी बड़ा खास है।
क्या खासियत है इस नम्बर में?

❺

अच्छा ये तो बताओ कि वर्णमाला में अक्षर कितने होते हैं?

❻

इस उल्लू के अन्दर से रास्ता ढूँढकर बाहर निकलने की कोशिश करो।

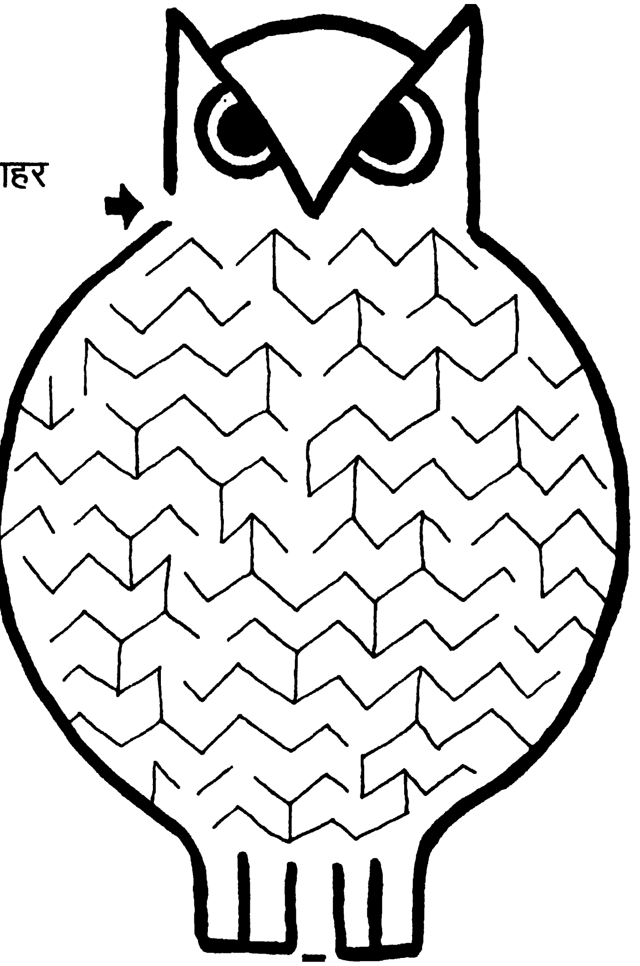

❼

आशी की टीचर का जन्म 1961 में हुआ था। जब आशी ने इस सन् यानी 1961 पर गौर किया तो उसे एक खास बात लगी। 1961 में से 19 को उलटा कर दो तो 61 बनेगा और अगर 61 को भी उलटा कर दो तो 19! आशी 1961 से पहले के ऐसे सन् को ढूँढ रही है जिसमें यही खासियत हो। क्या तुम आशी की मदद करोगे?

चमत्कारी पेड़

इस मज़ेदार कहानी के रूप में एक प्रश्न है। एक दिन जंगल में एक किसान को एक बूढ़ा आदमी मिला। दोनों बातें करने लगे। बूढ़े आदमी ने किसान से कहा, "इस जंगल में एक चमत्कारी पेड़ है।"

"अच्छा? क्या बीमारी का इलाज करता है?"

"ऐसा ही समझो, पैसों को दुगना करता है। अपना पैसा एक थैली में डालो और फिर थैली को पेड़ के नीचे रख दो। बस, सौ तक गिनती गिनो और लो – पैसा दुगना।"

"मैं आज़मा सकता हूँ क्या?" किसान ने पूछा।

"क्यों नहीं। पर हाँ, कुछ पैसा देना पड़ेगा।"

"किसको, और कितना?"

"उसे, जो तुम्हें पेड़ दिखाएगा। और वह आदमी मैं ही हूँ।" बूढ़े आदमी ने कहा।

फिर दोनों सौदेबाज़ी में लग गए। जब बूढ़े को पता चला कि किसान के पास थोड़ा-सा ही पैसा है, तो वह किसान की इस बात से सहमत हो गया कि हर बार दुगना करने के लिए 1 रुपया 20 पैसा देगा।

फिर वह दोनों जंगल के बीचोंबीच चले गए। बहुत देर तक झूठ-मूठ यहाँ वहाँ देखने के बाद बूढ़ा आदमी किसान को एक पेड़ के पास ले आया जिसकेआस-पास खूब झाड़ियाँ थीं। उसने किसान की पैसे की थैली दूर से ही पेड़ के पास पटक दी। फिर दोनों ध्यान से सौ तक गिनने लगे। बूढ़े आदमी ने खूब ढूँढा-ढाँढी के बाद थैली को खोजा और किसान के पास ले आया। किसान ने थैली खोली तो – लो, पैसा दुगना हो गया था। उसने 1 रुपया 20 पैसे गिने और बूढ़े आदमी को देते हुए कहा कि सारी कार्यवाही फिर दोहराओ। फिर से वह सौ तक गिनने लगे। और पहले की तरह बड़े परिश्रम से बूढ़े आदमी ने थैली खोज कर लौटाई। चमत्कार फिर हुआ। समझौते के आधार पर बूढ़े आदमी को फिर 1 रुपया 20 पैसे मिले।

किसान लालची हो गया। उसने तीसरी बार फिर थैली फिकवाई और पैसा दुगना हो गया। पर इस बार 1 रुपया 20 पैसे गिनने के बाद यह क्या? थैली खाली। बेचारे किसान ने सारा पैसा खो दिया। दुगना करने के लिए अब कोई पैसा नहीं बचा था।

चमत्कार का कारण तो तुम समझ ही गए होगे? सौ तक गिनना और खूब ढूँढा-ढाँढी करना एक तरीका था। बूढ़ा अपने साथी को इस बात का समय देता कि वह थैली में पैसा दुगना कर दे।

अब प्रश्न यह है कि पहली बार किसान की थैली में कुल कितना पैसा था?

चित्र : दुर्गा बाई

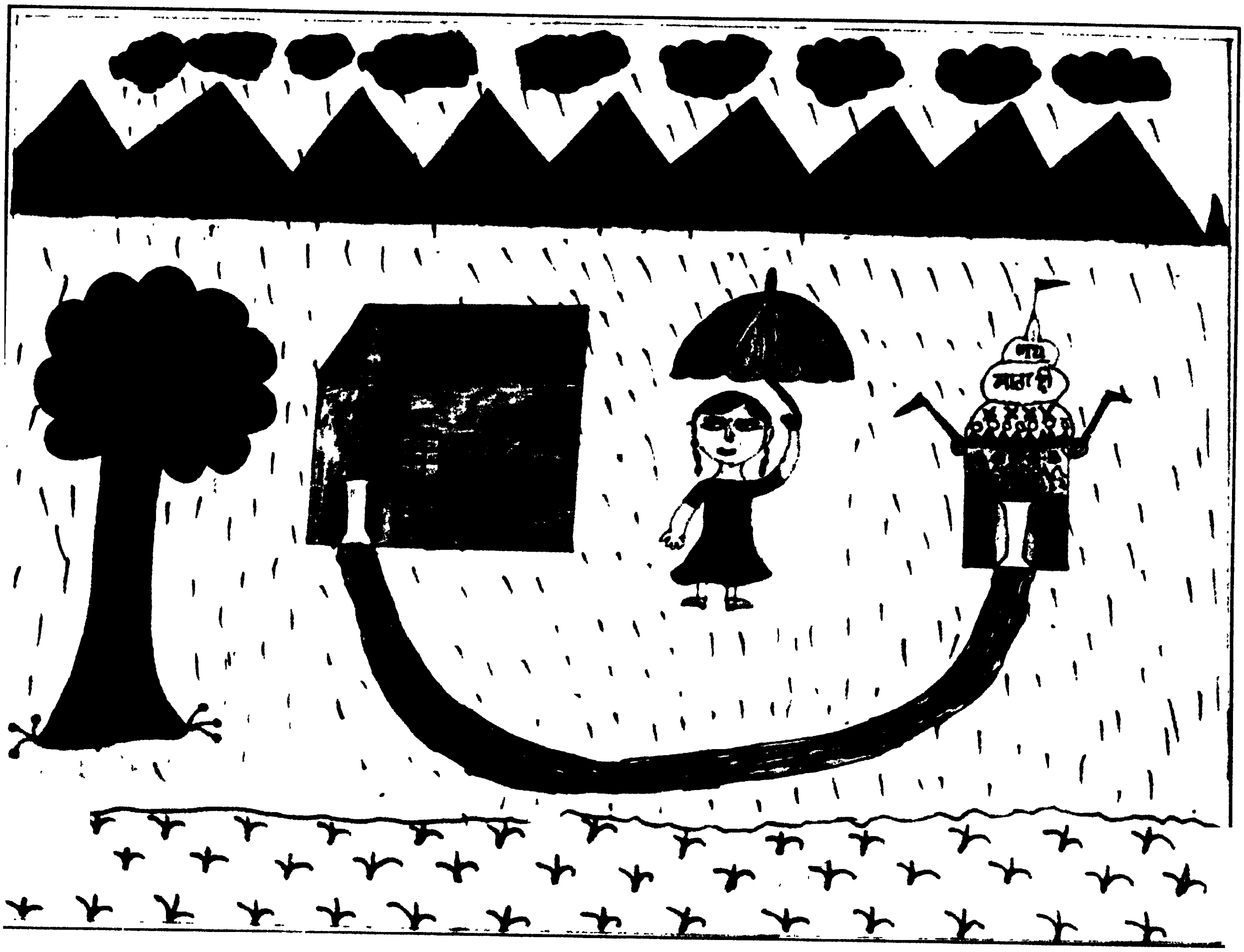

● ज्योति कैन, बाहरवीं, देपालपुर, इन्दौर, म.प्र

● नितेश टेलर, सतवास, देवास

12508